



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 216]

नई दिल्ली, बुध्दसतिवार, सितम्बर 7, 2006/भाद्र 16, 1928

No. 216]

NEW DELHI, THURSDAY, SEPTEMBER 7, 2006/BHADRA 16, 1928

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 6 सितम्बर, 2006

विषय : चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम हाइड्रो सल्फाइड (एसएचएस) के आयातों पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा—अंतिम जाँच परिणाम।

सं. 15/16/2005-डीजीएडी.—क. मामले की पृष्ठभूमि और अनुपालन की गई प्रक्रिया

वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 और सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर शुल्क या अतिरिक्त शुल्क का आकलन एवं संग्रहण और क्षति के निर्धारण के लिए) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी ने उप-शीर्ष सं. 2831.10 तथा 2382.10 के तहत आने वाले चीन जन. गण. (जिसे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम हाइड्रो सल्फाइड (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयात पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने की सिफारिश की थी। दिनांक 2.1.2001 की अधिसूचना सं. 39/1/2000-डीजीएडी के जरिए अनन्तिम जाँच परिणाम प्रकाशित किए गए थे और दिनांक 12.03.2001 को सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 28/2001-सीमाशुल्क के माध्यम से संबद्ध वस्तु पर अनन्तिम पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था। अधिसूचना सं. 39/1/2000-डीजीएडी के जरिए प्राधिकारी ने दिनांक 13.09.2001 को अंतिम जाँच परिणाम जारी किए और दिनांक 02.11.2001 की अधिसूचना सं. 114/2001-सीमाशुल्क के अनुसार सीमाशुल्क अधिकारियों द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था।

2. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग अर्थात् मै0 टीसीपी लि0 एवं मै0 गुलशन केमिकल्स लि0 के समर्थन के साथ मै0 ट्रांसपेक सिलॉक्स इंडस्ट्री लि0 और मै0 येमोशा केमिकल्स प्रा. लि. से इस आशय का अनुरोध प्राप्त होने पर चीन (जिसे एतदपश्चात् संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के अथवा वहाँ से निर्यातित सोडियम हाइड्रोसल्फाइड (एसएचएस) के आयात पर पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा प्रारंभ की। अनुरोध इस पृष्ठभूमि पर आधारित था कि उपायों की समाप्ति की परिणति पाटन तथा घरेलू उद्योग को क्षति के जारी रहने अथवा पुनः प्रारंभ होने के रूप में होगी। चीन जन. गण. के संबंध में पाटन के जारी रहने का आरोप घरेलू उद्योग को निर्यात हेतु बेचे जाने पर संबंधित उत्पाद की निर्यात कीमतों के साथ सामान्य मूल्य (इस चरण में बेल्जियम को अमरीका की कीमतों पर विचार किया गया था) की तुलना में आधारित था। इस आधार पर परिकलित पाटन मार्जिन को अत्यधिक माना गया था।

3. इसके अतिरिक्त आवेदकों ने और क्षति कारक पाटन की संभावना का आरोप लगाया। इस संबंध में आवेदक में कुछ साक्ष्य प्रस्तुत किए कि यदि उपायों को समाप्त होने के दिया जाता है तो संबंधित देशों से आयातों की संभावित कीमतों से लघु तथा मध्य अवधि में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होगी। इसके अतिरिक्त, आवेदक ने इस बात के साक्ष्य प्रस्तुत किए कि संबंधित देश में अप्रयुक्त क्षमता की उपस्थिति और उत्पादन क्षमता में हालिया निवेश के कारण संबंधित उत्पाद के वर्तमान आयात स्तर में अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। इसके अलावा, आवेदक ने आरोप लगाया कि यदि उपायों को समाप्त होने दिया जाए तो संबंधित देश से पाटन कीमतों पर अत्यधिक आयात पुनः प्रारंभ होने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति के पुनः प्रारंभ होने की संभावना है। आवेदकों द्वारा पाटन तथा क्षति के लगातार एवं निरंतर होने के संबंध में जो साक्ष्य प्रस्तुत किए गए, उन्हें प्राधिकारी ने प्रथम दृष्टया उल्लेखनीय माना है। यह निर्णायक समीक्षा, तदनुसार अधिसूचना सं. 15/6/2005 -डीजीएडी, दिनांक 4.10.2005 द्वारा शुरू की गई। प्राधिकारी स्मरण करते हैं कि मूल जाँच के अंतिम जाँच परिणाम दिनांक 13/9/2001 की अधिसूचना सं. 39/1/2000-डीजीएडी द्वारा अधिसूचित किए गए थे।

4. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल पाटनरोधी जाँच के जाँच परिणामों में उपलब्ध सूची के अनुसार संबंधित देश के रूपांतर, ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और घरेलू उद्योग को जाँच शुरूआत संबंधी अधिसूचना की प्रति भेजी और उनसे इस समीक्षा जाँच प्रारंभ होने के 40 दिनों के भीतर अपने विचारों से अवगत कराने का अनुरोध किया। संगत प्रश्नावली के अनुरूप प्रारूप एवं पद्धति से उत्तर देने का अनुरोध करते हुए पाटनरोधी नियमावली के अनुसार सभी हितबद्ध पक्षकारों को संगत प्रश्नावली के साथ-साथ घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत याचिका की प्रति भी भेजी गई थी। किसी भी निर्यातक ने जाँच शुरूआत अधिसूचना और पाटनरोधी शुल्क जारी रखने के अनुरोध के लिए घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत याचिका का उत्तर नहीं दिया। मैड अरविंद मिल्स के अलावा किसी अन्य आयातक ने निर्धारित प्रारूप एवं पद्धति में आयातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया। तथापि, कुछेक आयातकों ने कुछ तर्क प्रस्तुत किए हैं जिनका निर्दिष्ट प्राधिकारी ने संगत पाई गई सीमा तक विस्तार से विश्लेषण किया है।

5. पाटन एवं क्षति की जाँच में 1 अप्रैल, 2004 से 31 मार्च, 2005 तक की अवधि शामिल है जिसे जाँच अवधि भी कहा गया है। क्षति विश्लेषण के संदर्भ में प्रवृत्तियों की जाँच में 1 अप्रैल, 2001 से जाँच अवधि की समाप्ति तक की अवधि (विचाराधीन अवधि या क्षति अवधि के रूप में भी ज्ञात) शामिल है। डीजीसीआई एंड एस तथा एक्विजमकी नामक गौण स्रोत द्वारा उपलब्ध कराए गए सौदे-वार आँकड़ों से आयात आँकड़ों की जाँच की गई है और डीजीसीआई एंड एस के सौदे-वार आँकड़ों तथा एक्विजम की नामक गौण स्रोत के जरिए संबंधित देशों से आयात की मात्रा एवं कीमत का निर्धारण किया गया है। (प्रकटन विवरण में गलत तरीके से एक्विजमनेट के रूप में उल्लिखित)।

6. इस अधिसूचना में **** का प्रयोग हितबद्ध पक्षकार द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना जिसे नियमों के तहत प्राधिकारी द्वारा गोपनीय ही माना गया है, के लिए किया गया है।

7. प्राधिकारी ने उनके द्वारा रखी जाने वाली सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य के अगोपनीय रूपान्तर को हितबद्ध पक्षकारों द्वारा जाँच हेतु उपलब्ध बनाए रखा।

6. पाटन; क्षति एवं कारणात्मक संबंध के बारे में अंतिम जाँच परिणाम के प्रयोजनार्थ उनके द्वारा आवश्यक मानी गई सूचना की प्राधिकारी ने मांग की और उसका सत्यापन किया। प्राधिकारी ने आवश्यक समझी गई सीमा तक घरेलू उद्योग की मौके पर जाँच की। आवेदक द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना के आधार पर सर्वोत्तम उत्पादन लागत और भारत में संबद्ध वस्तु को बनाने और बेचने की लागत निकालने के लिए घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का भी विश्लेषण किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग की क्षति को समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा।

9. नियम 6(6) के अनुसार, प्राधिकारी ने 1 मार्च, 2006 को हुई सार्वजनिक सुनवाई में सभी हितबद्ध पक्षकारों को मौखिक रूप से अपने विचार प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया। सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार प्रस्तुत करने वाले पक्षकारों से अपने विचारों का लिखित प्रस्तुतीकरण प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार इन जाँच परिणामों के लिए विचार किए गए आवश्यक तथ्यों/आधारों को ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों पर प्रकट किया गया था और उस पर प्राप्त टिप्पणियों की अंतिम जाँच परिणामों में जाँच की गई थी। यह भी उल्लेख किया जाता है कि प्रकटन विवरण जारी करने के बाद एक आयातक मै0 अरविन्द मिल्स ने प्रकटन विवरण का उत्तर देने का उत्तर देने के लिए और अधिक समय तथा सार्वजनिक फाइल की जाँच करने की अनुमति की मांग की थी। अनुरोध की जाँच करने के बाद प्राधिकारी ने आयातक को एक सप्ताह का अतिरिक्त समय और सार्वजनिक फाइल की जाँच की अनुमति प्रदान की थी। मै0 अरविन्द मिल्स के उत्तर पर इस अंतिम जाँच परिणाम में उचित रूप से विचार किया गया है।

ख. विचाराधीन उत्पाद

10. मूल जाँच तथा वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में शामिल विचाराधीन उत्पाद सोडियम हाइड्रोसल्फाइड है। सोडियम हाइड्रोसल्फाइड एक सफेद या सलेटी सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर है जो तीव्र गंधयुक्त और दृश्य विदेशी अवयवों से मुक्त होता है। इसका रसायनिक सूत्र $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_4$ है। सोडियम हाइड्रोसल्फाइड के उत्पादन में 'जिक प्रक्रिया' तथा 'सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया' नामक दो विनिर्माण प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जा रहा है। इन दोनों प्रक्रियाओं में उत्पाद की उत्पादन लागत और मूल्य अलग-अलग होते हैं। सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया की तुलना में जिक प्रक्रिया की उत्पादन लागत और बिक्री प्राप्ति उच्चतर होती है। तथापि, इन दोनों प्रक्रियाओं के उत्पादन के प्रति उपभोक्ताओं के दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं है। उपभोक्ता दोनों उत्पादों का एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते हैं। चीन के उत्पादक भी सोडियम हाइड्रो-सल्फाइड के उत्पादन के लिए 'जिक प्रक्रिया' तथा 'सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया' का प्रयोग करते हैं। सोडियम हाइड्रो-सल्फाइड सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के तहत वर्गीकृत एक अकार्बनिक रसायन है। आमतौर पर इस उत्पाद का आयात उप-शीर्ष सं0 28311010 तथा 28321020 के तहत किया जाता है। सोडियम हाइड्रोसल्फाइड का प्रयोग वस्त्र, साबुन, शीरा, गोंद तथा न्यूनकारी पदार्थ, धातु के धात्विक आयनों के डाइसल्फाइड, ऊनी बालों में लिकेज आदि जैसे विविध औद्योगिक क्षेत्रों में व्यापक रूप से किया जाता है।

11. एक आयातक, मै0 अरविन्द मिल्स लि0 ने उत्पाद क्षेत्र के बारे में अपने अनुरोध प्रस्तुत किए हैं। अरविन्द मिल्स ने यह तर्क दिया था कि उत्पादन प्रक्रिया और कच्ची सामग्री में अंतर से अलग-अलग

उत्पाद विनिर्मित होते हैं और कि जिक्र प्रक्रिया तथा सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया से उत्पादित सोडियम हाइड्रो-सल्फाइट को दो अलग-अलग उत्पाद माना जाना चाहिए। केवल भारतीय उत्पादक संबद्ध वस्तु के विनिर्माण हेतु जिक्र प्रक्रिया का प्रयोग करते हैं, जो सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया की तुलना में मंहगी है। तदनुसार, अरविन्द मिल्स ने उत्पाद क्षेत्र की समीक्षा का अनुरोध किया है। इसके अलावा यह अनुरोध किया गया था कि क्षतिरहित कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ जिक्र प्रक्रिया की उत्पादन लागत पर विचार न किया जाए क्योंकि वह मंहगी प्रक्रिया है। यह भी निवेदन किया गया था कि भिन्न-भिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं से उत्पादित संबद्ध उत्पाद के लिए अलग-अलग गैर क्षतिकारक कीमत निर्धारित किए जाने की आवश्यकता है। दूसरी ओर घरेलू उद्योग ने आरोप लगाया है कि उत्पादन प्रक्रिया में अंतर से दोनों उत्पाद अलग-अलग उत्पाद नहीं हो जाते हैं। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी कहा गया है कि अरविन्द मिल्स स्वयं उनके द्वारा दोनों प्रक्रियाओं से उत्पादित उत्पाद खरीद रहे हैं। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी निवेदन किया गया है कि चीन के उत्पादक भी सोडियम हाइड्रोसल्फाइट के विनिर्माण में समान प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं और उन्होंने जिक्र प्रक्रिया के जरिए सोडियम हाइड्रोसल्फाइट के उत्पादन के लिए क्षमता भी स्थापित की है। इससे यह तथ्य और भी स्थापित हो जाता है कि चीनी तथा भारतीय उत्पादकों द्वारा प्रयोग की जा रही प्रक्रियाएँ तुलनीय हैं और घरेलू रूप से विनिर्मित तथा संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु पाटनरोधी कानून के अर्थ के भीतर 'समान वस्तुएँ' हैं। यह भी कहा गया है कि उत्पाद प्रकार में अंतर कीमत तुलना का मामला है। तथापि, जब तक विदेशी उत्पादक निर्दिष्ट प्राधिकारी को उत्तर न दें, यह व्यवहार्य नहीं है क्योंकि दो भिन्न प्रक्रियाओं से उत्पादित तथा भारत को निर्यातित वस्तुओं को अलग करने का कोई तरीका नहीं है। संबद्ध उत्पाद के विनिर्माण में अपनाई गई प्रक्रिया पर ध्यान दिए बिना उपभोक्ता भी उत्पाद खरीदते हैं।

12. मामले की जाँच की गई थी और यह नोट किया गया था कि मूल जाँच और वर्तमान निर्णायक समीक्षा जाँच में शामिल विचाराधीन उत्पाद सोडियम हाइड्रोसल्फाइट है। सोडियम हाइड्रोसल्फाइट सफेद या सलेटी सफेद क्रिस्टलाइन पाउडर है जो तीव्र गंधयुक्त तथा दृश्य विदेशी अवयवों से मुक्त होता है। इसका रसायनिक सूत्र $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_4$ हैं।

13. सभी निवेदनों और रिकार्डों की जाँच के बाद यह नोट किया गया है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सोडियम हाइड्रोसल्फाइट के विनिर्माण में भिन्न-भिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जाता है। भारत में मुख्य रूप से जिक्र रूट प्रक्रिया और सोडियम फॉर्मेट प्रक्रिया का प्रयोग होता है। जिक्र रूट में, जिक्र डस्ट प्रमुख कच्ची सामग्री होती है और सोडियम फॉर्मेट रूट में सोडियम फॉर्मेट प्रमुख कच्ची सामग्री होता है। प्रयुक्त प्रमुख कच्ची सामग्री में अंतर के आधार पर दोनों प्रक्रियाओं में अंतर होता है। घरेलू उद्योग द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि चीन के उत्पादक भी इन्हीं दो उत्पादन प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं और उनके अनुरोध का संबद्ध देश के निर्यातकों द्वारा विरोध नहीं किया गया है। सोडियम हाइड्रोसल्फाइट सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 28 के तहत वर्गीकृत एक अकार्बनिक रसायन है। इस उत्पाद को उप-शीर्ष सं० 28311010 तथा 28321020 के तहत भी वर्गीकृत किया गया है।

14. यह स्वीकार किया गया है कि उत्पाद क्षेत्र और समान वस्तु के निर्धारण के लिए कोई एक कारक निर्णायक नहीं है। समान वस्तु के निर्धारण के लिए प्राधिकारी आमतौर पर तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं प्रयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण, कीमतों, प्रतिस्थापनीयता, उपभोक्ता दृष्टिकोण

आदि पर विचार करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि केवल उत्पाद के उत्पादन में प्रयुक्त उत्पादन प्रक्रिया में अंतर यह निर्धारित करने के लिए पर्याप्त नहीं है कि इन दो प्रक्रियाओं के उत्पाद असमान उत्पाद हैं। अलग-अलग प्रक्रियाओं के प्रयोग से उत्पादित संबद्ध उत्पाद का अंतिम प्रयोग समान है और इन दो प्रक्रियाओं के उत्पाद के लिए उपभोक्ता के दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं है। साक्ष्यों के साथ घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत की गई सूचना से यह स्पष्ट है कि चीन के उत्पादक संबद्ध वस्तु के विनिर्माण में इन्हीं दो प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। अतः यह नोट किया गया है कि किसी एक उत्पादन प्रक्रिया से उत्पादित आयातित संबद्ध वस्तु को अलग-अलग करना संभव नहीं है क्योंकि निर्यातकों/उत्पादकों ने प्राधिकारी को संगत सूचना प्रस्तुत नहीं की है। इसके अतिरिक्त, आयात सौदों से आयस्ति सामग्री के उत्पादन में प्रयुक्त प्रक्रिया का पता लगाना भी उतना ही असंभव है। यह भी नोट किया गया है कि किसी भी निर्यातक ने इस जाँच में भागीदारी नहीं की है। उपर्युक्त के आधार पर यह नोट किया गया है कि ऊपर उल्लिखित दोनों प्रक्रियाओं से विनिर्मित संबद्ध वस्तु को विकराधीन उत्पाद के क्षेत्र में शामिल किया गया है।

ग. समान वस्तु

15. आवेदकों ने दावा किया कि भारतीय उत्पादकों द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु है। उत्तर देने वाले आयातकों और/या उपभोक्ताओं ने भी इस बात का विरोध नहीं किया है कि भारत में उत्पादित संबद्ध वस्तु आयातित उत्पाद के समान वस्तु है। मूल जाँच के प्राधिकारी ने भी यह पाया कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देश के मूल की अथवा वहाँ से निर्यातित संबद्ध वस्तु के समान वस्तु है। यद्यपि यह तर्क दिया है कि ज़िंक रूट तथा सोडियम फार्मेट रूट से उत्पादित सोडियम हाइड्रोसल्फाइड भिन्न-भिन्न उत्पाद हैं, तथापि इस बात के लिए कोई तर्क नहीं दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु आयातित वस्तु के समान वस्तु नहीं है। रिकॉर्ड में उपलब्ध समस्त सूचना की जाँच करने के बाद प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के गुणावगुण संबद्ध देश से आयातित वस्तु के गुणावगुणों के समान हैं। नियम 2(घ) के अंतर्गत समान वस्तु के अर्थ के भीतर आवेदकों द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु और संबद्ध देश से निर्यातित वस्तु में कोई विशेष अंतर नहीं है।

16. जाँच के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु के गुणावगुण संबद्ध देशों से आयातित और निर्यातक देश के बाजार में बेची जाने वाली संबद्ध वस्तु के गुणावगुणों के समान हैं। आवेदक द्वारा उत्पादित तथा संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई विशेष अंतर नहीं है। समान वस्तु के संबंध में प्राधिकारी आगे नोट करते हैं कि समान वस्तु की परिभाषा से संबंधित नियम 2(घ) में यह विनिर्दिष्ट है कि समान वस्तु का तात्पर्य किसी ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में जाँचाधीन वस्तु के काफी समान गुणावगुणों वाली वस्तु के समान है। यह स्थापित करने के लिए कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों से निर्यातित वस्तु के समान वस्तु हैं, प्राधिकारी द्वारा तकनीकी विनिर्देशनों, विनिर्माण प्रक्रिया, कार्य एवं प्रयोग तथा टैरिफ वर्गीकरण, कीमत आदि जैसे गुणावगुणों पर विचार किया गया है। विस्तृत जाँच के बाद प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित तथा वहाँ बेचा जाने वाला सोडियम हाइड्रोसल्फाइड नियमों के अर्थ के भीतर समान वस्तु हैं।

घ. घरेलू उद्योग

17. भारत में संबद्ध उत्पाद के चार उत्पादक अर्थात् मै० ट्रांसपेक सिलॉक्स इंडस्ट्री लि०; मै० देमोशा केमिकल्स प्रा० लि०, मै० टीसीपी लि० और मै० गुलशन केमिकल्स लि० हैं। पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा, उसे जारी रखने तथा उसमें सुधार के लिए याचिका संयुक्त रूप से मै० ट्रांसपेक सिलॉक्स इंडस्ट्री लि०, तथा मै० देमोशा केमिकल्स प्रा० लि० द्वारा दायर की गई थी। अन्य दो उत्पादकों, मै० टीसीपी लि० और मै० गुलशन केमिकल्स लि० ने याचिका का समर्थन किया था। जाँच शुरूआत के बाद मै० टीसीपी लि० ने प्राधिकारी को क्षति के संबंध में समस्त संगत सूचना उपलब्ध कराई है जिसका सत्यापन किया गया था। यह नोट किया गया है कि ट्रांसपेक सिलॉक्स इंडस्ट्री लि०, देमोशा केमिकल्स प्रा० लि० तथा टीसीपी लि० का कुल उत्पादन भारतीय उत्पादन के 50% से बहुत अधिक है। इस संबंध में कई तर्क दिए गए थे कि गुलशन केमिकल्स लि० को क्षति नहीं हुई थी और प्राधिकारी को उस कम्पनी से भी संगत सूचना की मांग करनी चाहिए। कम्पनी की वार्षिक रिपोर्टें भी प्राधिकारी को उपलब्ध कराई गई थी। प्राधिकारी ने मै० गुलशन केमिकल्स से संगत सूचना प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था तथापि, कम्पनी से कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था।

नियमावली के नियम 2(घ) में निम्नलिखित प्रावधान है :-

"(ख) 'घरेलू उद्योग का अर्थ है समग्र रूप से घरेलू उत्पादक जो समान वस्तु के विनिर्माण में तथा उनसे जुड़े किसी कार्य-कलाप में लगे हों अथवा वे जिनका कथित वस्तु का सामूहिक उत्पादन उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात हो सिवाय इसके कि ऐसे उत्पादक कथित पाटित वस्तु के निर्यातकों अथवा आयातकों से संबंधित हों अथवा वे स्वयं उनके आयातक हों, इस स्थिति में [ऐसे उत्पादक] घरेलू उद्योग का हिस्सा नहीं समझे जाएँगे।"

अतः, ऐसी परिस्थिति में जहाँ समग्र रूप से घरेलू उत्पादकों के बारे में सूचना उपलब्ध न हो, नियम में प्राधिकारी द्वारा उन उत्पादकों पर विचार किया जाना अपेक्षित है जिनका सामूहिक उत्पादन कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा अनुपात हो। इसलिए, कानूनी प्रावधानों और वर्तमान मामले के तथ्यों एवं परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी मानते हैं कि नियमावली के अर्थ के भीतर वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ मै० ट्रांसपेक सिलॉक्स इंडस्ट्री लि०, मै० देमोशा केमिकल्स प्रा० लि०, और मै० टीसीपी लि० घरेलू उद्योग हैं। यहाँ यह उल्लेख किया जाता है कि प्रकटन विवरण में टीसीपी को नुटिवरा एक याचिकाकर्ता कम्पनी बताया गया है। यह स्पष्ट किया जाता है कि टीसीपी याचिकाकर्ता कम्पनियों में से नहीं है। जाँच शुरूआत के पूर्व टीसीपी ने याचिका का समर्थन किया था और जाँच शुरूआत के पश्चात क्षति संबंधी पर्याप्त सूचना उपलब्ध कराई थी।

ड. पाटन का जारी रहना

18. धारा 9क (1) (ग) के तहत किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है :-

- (i) सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु के लिए उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियम के अनुसार यथानिर्दिष्ट तुलनात्मक मूल्य जबकि ऐसी वस्तु निर्यातक देश या क्षेत्र में उपभोग के लिए आशयित हो; या
- (ii) जहां निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में सामान्य व्यापार के दौरान समान वस्तु की कोई बिक्री नहीं हो या विशेष बाजार दशा के कारण अथवा निर्यातक देश या क्षेत्र के घरेलू बाजार में बिक्रियों की कम मात्रा के कारण, ऐसी बिक्रियों की वजह से समुचित तुलना नहीं हो सकती हो तो सामान्य मूल्य या तो:-

(क) निर्यातक देश या क्षेत्र से या किसी उचित तीसरे देश से आयात किए जाने पर समान वस्तु की उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित तुलनात्मक प्रतिनिधि कीमत होगी; या

(ख) उपधारा (6) के अंतर्गत बने नियमों के अनुसार यथा निश्चित प्रशासनिक, बिक्री और सामान्य लागतों एवं लाभों के लिए उचित वृद्धि के साथ वस्तु मूल के देश में उक्त वस्तु के उत्पादन की लागत होगी;

बशर्ते कि वस्तु का आयात जब मूलता के देश से भिन्न अन्य किसी देश से किया गया हो तथा जहां वस्तु निर्यात के देश से केवल गुजरी हो या ऐसी वस्तु निर्यात के देश से उत्पादित नहीं होती हो या निर्यात के देश में उसका कोई तुलनात्मक मूल्य नहीं हो तो इसके सामान्य मूल्य का निर्धारण मूलता के देश में इसके मूल्य के संदर्भ में किया जाएगा। उपर्युक्त के अनुसार सामान्य मूल्य का अर्थ निर्यातक देश के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कीमत है।

(क) सहयोग

19. किसी चीनी उत्पादक/निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और न ही वर्तमान जाँच से संबंधित कोई अन्य सूचना उपलब्ध कराई है।

(ख) सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत हितबद्ध पक्षकारों के तर्क

20. याचिकाकर्ताओं ने प्राधिकारी से नियमों के उपबंधों के अंतर्गत चीन को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था मानने का अनुरोध किया है। आवेदकों ने अमरीका को उचित प्रतिनिधि देश मानने का प्रस्ताव किया और सामान्य मूल्य का अनुमान अमरीका से बेल्जियम को निर्यात कीमत के आधार पर लगाया गया था। अमरीका सोडियम हाइड्रो-सल्फाइट का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है, अमरीकी बाजार में अत्यधिक प्रतिस्पर्धा की मौजूदगी, अमरीका से भारी निर्यात सामान्य मूल्य के प्रयोजनार्थ संगत सूचना की उपलब्धता आदि जैसे कारकों का उल्लेख यह दावा करने के लिए किया गया है कि अमरीका एक

उचित प्रतिनिधि देश है। घरेलू उद्योग द्वारा यह भी तर्क दिया गया था कि अन्य जाँच एजेंसियों जैसे यूरोपीय संघ ने चीन से संबंधित अनेक जाँचों में अमरीका को प्रतिनिधि देश माना है। वैकल्पिक रूप से आवेदकों का यह अनुरोध है कि भारत में दी गई या देय कीमत, जिसे लाभ मार्जिन को शामिल करके विधिवत रूप से समायोजित किया जाए, का भी चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारणार्थ प्रयोग किया जा सकता है। निर्यात कीमत के निर्धारण के संबंध में घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि चीनी सामग्रियों को मलेशिया, थाईलैंड और इंडोनेशिया के जरिए यानांतरित किया जा रहा है और इन्हें आयातों की मात्रा एवं मूल्य के निर्धारणार्थ शामिल किया जाना चाहिए। प्राधिकारी को उत्तर देने वाले आयातकों और उपभोक्ताओं में से एक मैडो अरविंद मिल्स ने तर्क दिया है कि अमरीका को प्रतिनिधि देश मानना उचित नहीं है क्योंकि अमरीका एक विकासशील देश है और उन्होंने इसके बजाय क्रिसपैक सिलोक्स की निर्यात कीमत का सामान्य मूल्य के साक्ष्य के रूप में मानने का सुझाव दिया है। अरविंद मिल्स ने यह भी तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग का यानांतरण का दावा भी साक्ष्यों के बिना है और इसका उद्देश्य आयात मात्राओं को बढ़ा-चढ़ाकर बताना है। अरविंद मिल्स ने यह भी तर्क दिया है कि उन देशों, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है, की सामग्रियों के यानांतरण की संभावनाओं से पूर्णतः इनकार नहीं किया जा सकता है। तथापि अरविंद मिल्स द्वारा इन तर्कों के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जाँच

21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि किसी भी निर्यातक ने प्राधिकारी के साथ सहयोग नहीं किया है। यह भी नोट किया जाता है कि बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे के बारे में चीनी उत्पादकों द्वारा कोई दावा नहीं किया गया है और न ही नियमावली के अनुबंध -1 के पैरा 8(3) के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा यथापेक्षित कोई साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है। चीनी उत्पादकों से संगत सूचना न मिलने के कारण प्राधिकारी ने चीन के सभी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए नियमावली के अनुबंध -1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए प्राधिकारी के पास उपलब्ध विभिन्न विकल्पों के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि अमरीका को प्रतिनिधि देश मानना उचित नहीं होगा क्योंकि इस संबंध में पर्याप्त सूचना उपलब्ध नहीं है। इस प्रकार प्राधिकारी के पास किसी बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश में कीमत या परिकलित मूल्य उपलब्ध नहीं है। तीसरे देशों से भारत समेत अन्य देशों को निर्यात कीमत भी पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं है। यह नोट किया जाता है कि अमरीका से बेल्जियम को कीमत के संबंध में आवेदक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना इस आधार पर सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए पर्याप्त नहीं है। उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी यह मानते हैं कि सामान्य मूल्य का निर्धारण केवल भारत में देय कीमत, जिसे तर्कसंगत लाभ मार्जिन शामिल करने के लिए विधिवत ढंग से समायोजित किया जाए, के आधार पर किया जा सकता है। इसका निर्धारण भारतीय उत्पादकों की उत्पादन लागत पर विचार करते हुए और इन्हें उचित ढंग से समायोजित करते हुए किया गया है। चीन में सामान्य मूल्य के निर्धारण के लिए निर्धारित उत्पादन लागत में तर्कसंगत लाभ जोड़ा गया है।

22. निर्यात कीमत के संबंध में, प्राधिकारी ने यानांतरणों के संबंध में विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों को नोट किया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने वस्तुओं के ऐसे यानांतरण के बारे में भारत सरकार के विभिन्न प्राधिकरणों के समक्ष लगातार शिकायत की है। एक थाईलैंड के व्यापारी से

स्पष्ट रूप से प्राप्त एक ई-मेल भी प्राधिकारी को उपलब्ध कराया गया है जिसमें उद्गम का देश बदलने के बाद चीनी वस्तुओं के निर्यात के प्रयासों को दर्शाया गया है। विस्तृत वेब सर्च के जरिए यह निश्चित करने के प्रयास किए गए थे कि क्या ये संबद्ध वस्तुएं वास्तव में इन तीसरे देशों में उत्पादित की गई थी या नहीं जिनसे यह प्रदर्शित नहीं हुआ कि इन तीसरे देशों में उत्पादन सुविधाएं थीं। मामले के विभिन्न तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए और रिकार्ड में उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी निर्यात कीमत के निर्धारण के प्रयोजनार्थ इन यानांतरित वस्तुओं को जाँच के दायरे से बाहर रखना उचित समझते हैं। तथापि इनके प्रभाव (कथित मात्रा तथा कीमत दोनों) पर प्राधिकारी द्वारा अलग-अलग विचार किया गया है। तदनुसार चीन के लिए संबद्ध देश से भारित औसत निर्यात कीमत का निर्धारण किया गया है।

23. अरविंद मिल्स द्वारा यह तर्क दिया गया है कि आयातित सामग्री सोडियम प्रारूप पद्धति के जरिए निर्मित सोडियम हाइड्रोसल्फाइड है। तथापि प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि इस बात का कोई साक्ष्य नहीं है कि आयातित सामग्री केवल सोडियम प्रारूप पद्धति से ही निर्मित है। रिकार्ड में उपलब्ध साक्ष्य यह दर्शाते हैं कि चीन में इन वस्तुओं का उत्पादन दोनों तरीकों से किया जा रहा है। घरेलू उद्योग ने चीन से निर्यातों के संबंध में सौदावार सूचना उपलब्ध कराई है, जिसमें दोनों तरीकों से उत्पादन करने वाले उत्पादकों समेत अनेक उत्पादकों द्वारा भी चीन से निर्यात प्रदर्शित होता है। अतः प्राधिकारी यह मानते हैं कि यह मानना उचित नहीं होगा कि आयातित सामग्री केवल सोडियम प्रारूप पद्धति से निर्मित थी।

24. निर्यात कीमत को समुद्री भाड़े, समुद्री बीमा, कमीशन, अंतर्देशीय भाड़े, पत्तन व्ययों, कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु बैंक प्रभारों के लिए समायोजित किया गया है। इस प्रकार निर्धारित निर्यात कीमत निम्नानुसार है :-

	पाटन मार्जिन की राशि	कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत
चीन से निर्यात (अमरीकी डालर/ मी. टन)	****	****

(ग) पाटन मार्जिन

25. इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य एवं निर्यात कीमत पर विचार करते हुए, पाटन मार्जिन का निर्धारण भारित औसत सामान्य मूल्य के साथ भारित औसत निर्यात कीमत की तुलना के आधार पर किया गया है। इस तुलना से पाटन की मौजूदगी, जैसाकि निम्नांकित तालिका में दर्शाया गया है, प्रदर्शित होती है :-

	पाटन मार्जिन की राशि	कारखाना द्वार पर निर्यात कीमत के % रूप में पाटन मार्जिन
चीन से निर्यात	****	91.25

26. यह तर्क दिया गया है कि सामान्य मूल्य गुलशन की उत्पादन लागत या ट्रांसपैक की तीसरे देशों को निर्यात कीमत या भारत को मलेशिया, इंडोनेशिया और थाइलैंड से होने वाले निर्यातों की कीमत पर आधारित होना चाहिए। इन हितबद्ध पक्षकारों का यह भी तर्क है कि अमरीका से बेल्जियम को होने वाले निर्यातों की कीमत पर विचार नहीं किया जा सकता है। प्राधिकारी इस संबंध में नोट करते हैं कि अमरीका से बेल्जियम को होने वाले निर्यातों की कीमत पर सामान्य मूल्य के निर्धारण में विचार नहीं किया गया है। इसके अलावा मलेशिया, इंडोनेशिया या थाइलैंड से भारत को निर्यात कीमत को इस आशय के साक्ष्य के अभाव में स्वीकार नहीं किया जा सकता कि इन देशों में वास्तव में उत्पादन होता है। इसके विपरीत, घरेलू उद्योग ने बार-बार यह अनुरोध किया है कि इन देशों में वस्तुओं का उत्पादन नहीं हो रहा था और इन देशों से दर्ज किए गए निर्यात चीनी सामग्री के यानांतरण के अलावा कुछ नहीं थे। इसके अलावा निर्दिष्ट प्राधिकारी गुलशन की उत्पादन लागत को कंपनी से पर्याप्त सहयोग के अभाव में स्वीकार नहीं कर सकते थे। ऐसे मामले में प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमावली में एक तर्कसंगत आधार के रूप में एसजीए और लाभों के लिए तर्कसंगत योग के साथ भारत में उत्पादन लागत पर विचार करते हुए सामान्य मूल्य के परिकलन की अनुमति है और प्राधिकारी ने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु आधार के रूप में भारत में उत्पादन लागत को स्वीकार किया है।

पाटन की संभावना

27. इस बात की जाँच करने के लिए कि क्या पाटनरोधी शुल्क हटाये जाने से विचाराधीन उत्पाद का पाटन जारी रहने या उसके बढ़ने की आशंका है प्राधिकारी ने निम्नलिखित सूचना/साक्ष्यों पर विचार किया है।

लगातार पाटन

क. पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी चीन से अत्यधिक कम तथा पाटित कीमतों पर संबंध वस्तु का लगातार आयात किया जा रहा है। मूल जाँच के समय और वर्तमान प्रचलित मानदंडों/परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। उपर्युक्त के मद्देनजर पाटनरोधी शुल्क हटाये जाने की स्थिति में चीनी उत्पादकों द्वारा उत्पाद का पाटन जारी रखने की आशंका है।

चीनी के उत्पादकों की अधिशेष क्षमता

ख. चीनी उत्पादकों द्वारा सृजित क्षमताओं के उनके स्थानीय बाजार में माँग की तुलना में काफी अधिक होने का दावा किया गया है। ज्ञात चीनी उत्पादकों के पास उपलब्ध मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमताएँ, जैसाकि दावा किया गया है, निम्नानुसार हैं :-

उत्पादक का नाम	क्षमता (मी. टन)
गुजानडोंग झोंगवेंग कैमिकल्स कं.लि.	260000
किंगबोर्ड	50,000
गुंताई क्लोर अल्कली	40,000
अन्हुई क्लोर-अल्कली कैमिकल्स ग्रुप लि0 कं0	30000
झोजियंग जयन्सुन कैमिकल्स कं0 लि0	80000

बुक्सी ग्रीन एप्पल केमिकल्स इंडस्ट्री लि०	18000
कुल ज्ञात क्षमता	478000
निर्यात (क)	85937
घरेलू माँग (ख)	165000
अतिरिक्त क्षमता	227063
प्रचालन दर को भारतीय उत्पादकों द्वारा प्राप्त क्षमता उपयोग पर विचार करते हुए माना गया है	80%
उत्पादन (ग)	382400
अतिरिक्त उत्पादन (ग-क-ख)	131463
मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमताएँ	313000
भारतीय माँग (जॉब अवधि में)	33000

(अलग-अलग कम्पनियों की वेबसाइट से जैसाकि घरेलू उद्योग द्वारा दावा किया गया है)

ग. चूँकि चीन जन.गण. के किसी निर्यातक द्वारा घरेलू उद्योग के दावों का कोई खण्डन नहीं किया गया है और प्राधिकारी के पास उपलब्ध रिकार्डों के मद्देनजर, यह माना जाता है कि चीन में मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमताएँ भारतीय माँग से काफी अधिक हैं।

चीन के उत्पादकों का निर्यातोन्मुखी होना

घ. चीन के उत्पादकों के पास उनकी घरेलू माँग से काफी अधिक क्षमताएँ विद्यमान हैं। वहाँ बड़े पैमाने के उत्पादक हैं जिनके द्वारा अनेक देशों को निर्यात किए जाने का दावा किया गया है। चीन के उत्पादकों में से एक के विश्व में 60 से अधिक गंतव्यों को निर्यात करने का दावा किया गया है (www.zhongcheng.gd.cn/english)। चीनी उत्पादकों के संबंध में उपलब्ध सूचना निम्नानुसार है:-

देश	2002-03		2003-04		2004-05	
	एमटी	दर अम.डा./मी.टन	एमटी	दर अम.डा./मी.टन	एमटी	दर अम.डा./मी. टन
विश्व	70684	535.52	84681	477	85937	547
भारत	563	517.45	1175	437	972	544

उपर्युक्त से चीनी निर्यातों की वृद्धि की प्रवृत्ति का पता चलता है। प्राधिकारी का यह विचार है कि चीनी उत्पादक निर्यातोन्मुखी हैं और उनके पास भारी मुक्त रूप से निपटान योग्य क्षमताएँ हैं।

लागू पाटनरोधी शुल्क (एडीडी) को निष्प्रभावी करने के लिए यानांतरण के आरोप

ड. भारतीय उत्पादकों ने यह आरोप लगाया कि चीनी वस्तुओं का मलेशिया, थाइलैंड और इंडोनेशिया से यानांतरण किया जा रहा था। प्राधिकारी द्वारा की गई विस्तृत वेब सर्च से इस बात का कोई साक्ष्य नहीं मिला है कि संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन मलेशिया, थाइलैंड और इंडोनेशिया में किया जा रहा है। इस बात पर संदेह के पर्याप्त कारण हैं कि चीन की वस्तुओं को मलेशिया, थाइलैंड और

इंडोनेशिया से यानांतरित किए जाने की संभावना है। इससे उपायों को हटाये जाने पर आयातों में वृद्धि की आशंका का संकेत मिलता है।

28. प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न तर्कों की जांच की है और उपर्युक्त की गई जाँच के आधार पर प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि भारत को पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तुओं का निर्यात किया गया है और चीन जन.गण. से पाटन मार्जिन अब भी काफी अधिक है तथा यदि पाटनशेधी शुल्क को हटाया जाता है तो पाटन के जारी रहने की आशंका है।

च. क्षति

निर्यातकों, आयातकों, प्रयोक्ताओं आदि के विचार

29. किसी चीनी उत्पादक/निर्यातक से कोई उत्तर नहीं मिला है और न ही किसी निर्यातक द्वारा क्षति एवं कारणात्मक संबंध समेत वर्तमान जाँच के किसी पहलु के संबंध में कोई तर्क प्रस्तुत किया गया है। केवल एक आयातक मै0 अरविंद मिल्स ने उत्तर प्रस्तुत किया है और अनेक मुद्दे उठाए हैं जिनका सारांश नीचे दिया गया है। आयातकों के प्रमुख तर्क इस प्रकार हैं :-

(क) घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। यह भी अनुरोध किया गया है कि घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले अनेक मापदंडों में सुधार हुआ है।

(ख) भारतीय उत्पादक आंतरिक प्रतिस्पर्धा से नुकसान उठा रहे हैं और पाटित आयातों के कारण क्षति की संभावना नहीं है।

(घ) भारतीय उत्पादक अतिरिक्त क्षमता की स्थिति का सामना कर रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

(ङ) इस अवधि के दौरान आयातों की मात्रा नगण्य रही है और यानांतरण को शामिल करने के बाद भी इसका देश की कुल माँग में काफी कम हिस्सा रहा है।

(च) आवेदक कम्पनियां बहु उत्पाद कम्पनियां हैं; अतः व्ययों का आबंटन तथा विभाजन अधिक क्षति दर्शाने के लिए गलत तरीके से किया गया होगा।

(छ) पाटन तथा क्षति के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है।

(ज) वित्तीय नुकसान की स्थिति को देखते हुए उद्योग ने क्षमता में वृद्धि नहीं की होगी।

च.2 घरेलू उद्योग के विचार

30. क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग ने अनेक तर्क प्रस्तुत किए हैं, जिनका सारांश निम्नानुसार है। प्रमुख तर्क निम्नलिखित हैं :-

(क) चीन से पाटन के कारण घरेलू उद्योग को लगातार क्षति हुई है, जो तीसरे देशों से वस्तुओं के आयात के कारण और अधिक बढ़ गई।

(ख) बिक्री, उत्पादन, उत्पादकता व क्षमता उपयोग की दृष्टि से घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार हुआ है, परन्तु बिक्री से प्राप्त आय, लाभ, निवेश से आय, बाजार हिस्से तथा सामान सूची की दृष्टि से इसमें गिरावट आई है। पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में वास्तविक सुधार नहीं हुआ।

(ग) पाटनरोधी शुल्क लगाने से घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में सुधार होने की अपेक्षा की गई थी। कुछेक बार ऐसा नहीं हुआ। तथापि प्रवचन जैसी पद्धतियों के कारण घरेलू उद्योग को निरंतर क्षति होती रही।

(घ) अरविन्द मिल्स द्वारा प्रश्नावली के उत्तर निर्धारित प्रारूप व पद्धति से प्रस्तुत नहीं किए गए।

(ड.) घरेलू उद्योग को आंतरिक प्रतिस्पर्धा से नुकसान नहीं हो रहा है; न ही भारतीय उत्पादक क्षमता के अत्यधिक उपयोग का सामना कर रहे हैं, जिससे घरेलू उद्योग को नुकसान हुआ होता। इसके अलावा, यदि यह मान भी लिया जाए कि आंतरिक प्रतिस्पर्धा विद्यमान थी, तो इससे यह प्रदर्शित होता है कि वर्तमान शुल्क वापस लेने से घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन में और भी गिरावट आती। यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि स्वस्थ आंतरिक प्रतिस्पर्धा और पाटन पद्धतियों के कारण हुई अनुचित प्रतिस्पर्धा में फर्क किया जाना चाहिए। विभिन्न ग्राहकों को बेची गई सामग्री की कीमतों में उल्लेखनीय भिन्नता होने से यह स्थापित होता है कि भारतीय उत्पादकों को गला काट आंतरिक प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं करना पड़ रहा है। इसके अलावा घरेलू उद्योग ने प्रतिवाद किया है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यह जांच की जानी अपेक्षित है कि क्या आंतरिक प्रतिस्पर्धा से घरेलू उद्योग को क्षति हुई है; क्योंकि घरेलू उद्योग के अनुसार यह कोई सूचीबद्ध मानदण्ड नहीं है। नियमावली में सूचीबद्ध मानदण्ड "विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा" है।

- (च) नियमावली में निर्दिष्ट प्राधिकारी से "घरेलू उद्योग को क्षति" पर विचार करने की अपेक्षा की गई है। यह मानते हुए, परन्तु यह स्वीकार न करते हुए कि भारतीय उत्पादकों में से एक अथवा अधिक उत्पादक मुनाफा कमा रहे हैं; जबकि अन्य उत्पादकों को वित्तीय नुकसान हो रहा है, यह ध्यान रखना सबसे जरूरी है कि क्या घरेलू उद्योग को वास्तव में क्षति हो रही है। यह तथ्य कि गुलशन केमिकल्स को नुकसान हो रहा है अथवा नहीं, पूर्णतः असंगत है, क्योंकि घरेलू उद्योग तीन कम्पनियों से मिलकर बना है। यह भी तर्क दिया गया है कि गुलशन केमिकल्स को क्षति हुई है, जैसा कि क्षति अवधि में इस कम्पनी के मुनाफे में आई गिरावट से देखा जा सकता है।
- (छ) अत्यधिक क्षमता असंतुलन की कोई स्थिति नहीं है। इसके अलावा क्षमता वृद्धि को अरविन्द मिल्स द्वारा घोषित व्यापक क्षमता वृद्धि के संदर्भ में देखा जाना चाहिए।
- (ज) चीन से आयातों की मात्रा न तो न्यूनतम से कम है, और न ही नगण्य। इसके अलावा यानान्तरिक आयातों को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। ऐसा होते हुए भी प्राधिकारी से नियमावली में यह निर्धारण करने की अपेक्षा नहीं की गई है कि आयात न्यूनतम से अधिक थे अथवा उल्लेखनीय थे।
- (झ) वर्तमान स्थिति को देखते हुए और इस तथ्य के मद्देनजर कि चीन के उत्पादकों के पास उल्लेखनीय निपटान योग्य क्षमता है, पाटनरोधी शुल्क वापस ले लेने से चीन से आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा उल्लेखनीय कीमत कटौती की जाएगी और सामग्री के निर्यात में प्रयुक्त यानान्तरण विधि से यह स्पष्ट है कि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने पर निर्यात में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।
- (ञ) शुरुआती कच्चे माल अथवा उत्पादन प्रक्रिया में अन्तर से घरेलू उद्योग पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ा है। वास्तव में सोडियम फॉर्मेट रूट उत्पाद के मामले में घरेलू उद्योग को भारी वित्तीय नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। यद्यपि विभिन्न प्रक्रियाओं के माध्यम से उत्पादित वस्तुएं समान वस्तुएं हैं, तथापि उत्पादकों को विविध कीमतों के कारण आय हो रही है।
- (ट) व्ययों के आबंटन/विभाजन में सम्भावित त्रुटियों के बारे में लगाए गए आरोप आधारहीन हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने न केवल विस्तृत सत्यापन किया अपितु इस मामले में ट्रांसपेक-साइलॉक्स द्वारा अपनाई गई विधि भी वही थी जो सोडियम फॉर्मेटिहाइड सल्फोजाइलेट से संबंधित जांच में उक्त कम्पनी द्वारा अपनाई गई थी।

प्राधिकारी द्वारा जांच

आयात सांख्यिकी

31. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग ने चीन की वस्तुओं के यानांतरण का आरोप लगाया है और विभिन्न प्रकार के साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं; मेसर्स अरविन्द मिल्स ने यानांतरण के दावे का प्रतिवाद किया है और यह भी कहा है कि यानान्तरण अन्य देशों से भी हो सकता है। प्राधिकारी मानते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के मद्देनजर अन्य देशों से चीन की वस्तुओं के यानांतरण की सम्भावना से इंकार नहीं किया जा सकता। इसके अलावा प्राधिकारी द्वारा यानांतरण के संबंध में घरेलू उद्योग के दावे की जांच पाटित आयातों की वास्तविक तथा सम्भावित मात्रा, इन दोनों दृष्टियों से की गई। इस मामले के तथ्यों व परिस्थितियों को देखते हुए प्राधिकारी ने यह उचित समझा है कि मात्रा तथा कीमत क्षति का विश्लेषण करते समय चीन द्वारा सूचित आयात मात्राओं में से यानांतरण अर्थात् थाईलैंड, इण्डोनेशिया तथा मलेशिया द्वारा सूचित आयात मात्राएं घटा दी जाएं। ऐसा इस तथ्य को ध्यान में रखकर किया गया है कि प्राधिकारी के समक्ष कोई ऐसे ठोस साक्ष्य अथवा आंकड़े नहीं हैं, जिनसे यह मत व्यक्त किया जा सके कि इन देशों के सभी आयात वास्तव में चीन जन.गण. के उद्गम के हैं। तथापि, प्राधिकारी द्वारा थाईलैंड, मलेशिया तथा थाईलैंड से किए गए आयातों की अलग-अलग जांच की गई है क्योंकि उक्त देशों में कोई ज्ञात उत्पादक नहीं हैं और इस तथ्य के कारण भी, कि यानांतरण के संबंध में घरेलू उद्योग के दावे का खण्डन करने के लिए कोई निर्यातक आगे नहीं आया। इसके अलावा, आयातों से संबंधित सूचना डी जी सी आई एण्ड एस से मंगाई गई और द्वितीयक स्रोत की जानकारी घरेलू उद्योग द्वारा उपलब्ध कराई गई। इस प्रकार प्राधिकारी द्वारा सम्बद्ध देशों की आयात मात्राओं पर विचार किया गया, जो डी जी सी आई एंड एस तथा द्वितीयक स्रोत सूचना एक्जिम की (www.eximkey.com) द्वारा सूचित की गई।

32. यह दावा किया गया है कि एक्जिम की आंकड़ों का प्रयोग केवल जांच अवधि हेतु किया गया। यह भी दावा किया गया है कि प्राधिकारी ने एक ही आयात प्रविष्टि को दो बार विचारार्थ ले लिया होगा। तथापि, यह स्पष्ट किया जाता है कि विगत वर्षों से संबंधित एक्जिम आंकड़ों की जांच की गई थी। विगत वर्षों से संबंधित एक्जिम की आंकड़ों में किसी अतिरिक्त आयात प्रविष्टि की सूचना नहीं दी गई है। इसके अलावा, चूंकि प्राधिकारी ने सौदावार आयात आंकड़ों को विश्वसनीय माना है, अतः किसी आयात प्रविष्टि को दो बार विचारार्थ लेने की सम्भावना नहीं है। यह भी नोट किया गया है कि इस तर्क का कोई आधार नहीं है कि प्राधिकारी द्वारा निर्धारित आयात मात्राएं बही होनी चाहिए जो आवेदकों ने अपने आवेदन में निर्धारित की हैं, क्योंकि आयात मात्रा तथा मूल्य की पुनः जांच डी जी सी आई एंड एस से प्राप्त आंकड़ों (नवीनतम) तथा द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों से की गई है।

33. यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि यानांतरित आयातों को शामिल नहीं किया जा सकता। यह एक बार पुनः स्पष्ट किया जाता है कि घरेलू उद्योग की मांग एवं क्षति का निर्धारण करते समय यानांतरित आयातों पर विचार नहीं किया गया।

34. कतिपय हितबद्ध पक्षों ने यह तर्क दिया है कि प्राधिकारी द्वारा टी सी पी को घरेलू उद्योग के दायरे में गलत तरीके से शामिल कर लिया गया है। यह भी तर्क प्रस्तुत किया गया है कि प्राधिकारी द्वारा गुलशन केमिकल्स को भी घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल किया जाना चाहिए था। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 2(ख) के अंतर्गत घरेलू उद्योग के दायरे में टी सी पी को शामिल करना पूर्णतः न्यायोचित है। पुष्टि की जाती है कि टी सी पी द्वारा प्रदत्त सूचना का सत्यापन और सूचना मंगाकर तथा मौके पर जांच करके किया गया। प्राधिकारी यह भी मानते हैं कि प्राधिकारी के विशेष अनुरोध के बावजूद गुलशन केमिकल्स ने प्राधिकारी को कोई उत्तर नहीं दिया अतः इस कम्पनी को घरेलू उद्योग के दायरे में शामिल नहीं किया जा सकता। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि नियमावली में यह प्रावधान नहीं है कि प्राधिकारी द्वारा उन घरेलू उत्पादकों को भी शामिल कर लिया जाए जो प्राधिकारी से सहयोग करने के इच्छुक नहीं हैं।

35. कुछेक हितबद्ध पक्षों ने यह तर्क दिया है कि टी सी पी तथा याचिकाकर्त्ताओं पर विचार करते हुए घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच अलग से की जाए। तथापि, प्राधिकारी यह मानते हैं कि इस तर्क का कोई कानूनी आधार नहीं है। नियम 2 (ख) में घरेलू उद्योग को "सभी घरेलू उत्पादक" अथवा "वे जिनका सामूहिक उत्पादन, उत्पादन का प्रमुख हिस्सा है" के रूप में परिभाषित किया गया है। इस प्रकार प्राधिकारी द्वारा सभी कम्पनियों पर सामूहिक रूप से विचार किया जाना अपेक्षित है, क्योंकि नियमावली में याचिकाकर्त्ता एवं समर्थक में भेद करने का प्रावधान नहीं किया गया है।

36. कतिपय हितबद्ध पक्षों ने यह दावा किया है कि घरेलू उद्योग को नुकसान जिक रूट उत्पादन के कारण हुआ है, क्योंकि इस रूट की लागत अधिक है तथापि इन हितबद्ध पक्षों ने इस दावे के समर्थन में कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है। दरअसल, जांच से यह ज्ञात हुआ है कि ट्रांसपेक, जो जिक रूट तथा हाइड्रो रूट उत्पाद का उत्पादन करता है, को हाइड्रो रूट उत्पाद के उत्पादन व बिक्री से अधिक क्षति हुई है।

मांग का आकलन

37. विचाराधीन उत्पाद की घरेलू खपत/मांग की गणना करने के लिए प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग व अन्य भारतीय उत्पादकों की बिक्री मात्रा को भी भारत में कुल आयातों में जोड़ दिया गया।

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
घरेलू उद्योग द्वारा बिक्री	21287	22900	23413	24014
बिक्री - सूचीबद्ध	100.00	107.57	109.98	112.81
अन्य भारतीय उत्पादकों द्वारा बिक्री	5000	7000	7500	7500
कुल आयात	1840	1683	1518	1365

सूचीबद्ध	100.00	91.50	82.49	74.22
मांग	28127	31583	32430	32880
मांग - सूचीबद्ध	100	112.29	115.30	116.90

प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि मांग सकारात्मक प्रवृत्ति दर्शाती है और यह क्षति की अवधि में 16.90 % की दर से बढ़ी है।

आयात मात्रा एवं बाजार हिस्सा

38. जहाँ तक पाटित आयातों की मात्रा का प्रश्न है, यह जांच की गई कि क्या निरपेक्ष रूप से अथवा उत्पादन के सापेक्ष अथवा भारत में खपत के रूप में पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध (II) में निम्नलिखित प्रावधान है:-

'पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी यह विचार करेंगे कि क्या निरपेक्ष रूप में अथवा उत्पादन के सापेक्ष अथवा भारत में खपत के रूप में पाटित आयातों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है.....'

39. आयात आंकड़ों की जांच के पश्चात यह नोट किया गया कि पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने पर वर्ष 2002-03 में पाटित आयातों में भारी गिरावट आई। तथापि, इनकी मात्रा में वर्ष 2003-04 तथा 2004-05 में लगातार वृद्धि हुई जैसा कि निम्नलिखित सारणी से देखा जा सकता है।

इकाई बी. टन	2001-02	2002-03	2003-04	जांच अवधि
आयात				
चीन से निर्यात	1095.00	121.00	516.80	764.80
कथित यानांतरण	1.00	0.00	407.67	378.18
अन्य देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है	0	0	371.05	222.47
अन्य देश	743.65	1562.35	222.06	0
कुल आयात	1839.65	1683.35	1617.58	1365.38
आयातों में बाजार हिस्सा				
चीन से निर्यात	59.52	7.19	34.05	56.01
कथित यानांतरण	0.05	0.00	26.86	27.70
अन्य देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है	0.00	0.00	24.45	16.29
अन्य देश	40.42	92.81	14.63	0.00
मांग				
मांग में बाजार हिस्सा				
चीन से निर्यात	3.89	0.38	1.59	2.33
कथित यानांतरण	0.004	0	1.28	1.15
अन्य देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है	0.00	0.00	1.14	0.68

अन्य देश	2.64	4.95	0.68	0.00
घरेलू उद्योग का उत्पादन				
घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आयात				
चीन से निर्यात	4.88	0.47	2.05	2.90
कथित यानांतरण	0.004	0.00	1.62	1.43
अन्य देश, जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है	0.00	0.00	1.47	0.84
अन्य देश	3.32	6.07	0.88	0.00

40. यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2003-04 से पाटित आयातों की मात्रा में इससे पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। तथापि जांच अवधि में चीन जन.गण. से पाटित आयातों का कुल हिस्सा पुनः उसी स्तर पर पहुँच गया, जहाँ यह आधार वर्ष में था। यह भी नोट किया गया है कि वर्ष 2001-02 में चीन से उल्लेखनीय मात्रा में आयात हुआ। घरेलू उद्योग ने विभिन्न सरकारी प्राधिकारियों को भेजे गए पत्रों की प्रतियाँ उपलब्ध कराई हैं, जिनमें निर्यातमुखी इकाइयों (ई ओ यू) द्वारा पाटनरोधी शुल्कों के भुगतान से छूट के दुरुपयोग की शिकायत की गई है।

आयातों का कीमत प्रभाव

41. जहाँ तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का प्रश्न है, यह जांच की गई कि क्या भारत में समान उत्पादों की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण उल्लेखनीय कीमत कटौती हुई है, अथवा क्या ऐसे आयातों का उद्देश्य कीमतों में उल्लेखनीय सीमा तक मंदी लाना है अथवा कीमत वृद्धि को रोकना है जो अन्यथा उल्लेखनीय सीमा तक हो जाती। घरेलू बाजार पर आयातों के प्रभाव का आकलन करने के लिए क्षति अवधि में आयात कीमतों का विश्लेषण किया गया, जिसका ब्यौरा निम्नलिखित है:-

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
सी आई एफ निर्यात मूल्य रु./मी.टन				
चीन से निर्यात	28547	28078	29079	25024
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है			32931	34392
अन्य देश	32208	31140	27414	
सीमाशुल्क	35%	30%	25%	20%
आयातों का पहुँच मूल्य				
चीन से निर्यात	38639	36586	36421	30079
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है			41247	41340
अन्य देश	43594	40575	34336	
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	98.32	96.13	89.15
घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत	****	****	****	****
सूचीबद्ध	100.00	97.87	102.11	104.78

कीमत कटौती

42. यह नोट किया गया कि आयातों के कारण बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में उल्लेखनीय कटौती हो रही है। इस प्रकार यह नोट किया गया कि यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाएं तो यह स्पष्ट है कि आयातों से बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों की उल्लेखनीय कटौती होगी। कीमत कटौती की सीमा निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है:-

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
कीमत कटौती राशि रुपये/मी.टन				
चीन से निर्यात	****	****	****	****
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है			****	****
अन्य देश	****	****	****	****
कीमत कटौती का प्रतिशत				
चीन से निर्यात	15-25%	20-30%	15-22%	25-35%
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है			8%	1%
अन्य देश	-6.61	-11.60	-23.48	

43. पाटनरोधी शुल्क वापस ले लिए जाने पर सम्भावित प्रभाव के निर्धारण हेतु उपर्युक्त कीमत कटौती का निर्धारण यद्यपि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को घटाने के बाद किया गया, तथापि इस समय लागू पाटनरोधी शुल्क के साथ कीमत कटौती के स्तर की जांच भी प्राधिकारी द्वारा की गई है। इसकी स्थिति निम्नलिखित है:-

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
कीमत कटौती राशि रुपये/मी.टन				
चीन से निर्यात	****	****	****	****
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है			****	****
कीमत कटौती का प्रतिशत				
चीन से निर्यात	-5-10%	-2-8%	-2-10%	3-10%
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगा है			-5-10%	-10-20%

44. यह देखा जा सकता है कि जांच अवधि में वर्तमान पाटनरोधी शुल्क जोड़ने के बावजूद चीन जन.गण. से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग द्वारा कीमत कटौती की जा रही है।

कीमत ह्रास/न्यूनीकरण

45. इस बात का आकलन करने के लिए कि क्या संबद्ध देशों से आयातों से घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास/उनका न्यूनीकरण हो रहा था प्राधिकारी ने बिक्री कीमतों में प्रवृत्तियों और उत्पादन लागत की तुलना की जैसा कि निम्नलिखित तालिका में देखा जा सकता है।

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली	****	****	****	****
सूचकांक	100.00	98.32	96.13	89.15
घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत	****	****	****	****
सूचकांक	100.00	97.87	102.41	104.78

46. यह पाया गया है कि घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में क्षति अवधि के दौरान कमी आ रही थी। अतः घरेलू उद्योग की कीमतें कम थीं। इसके साथ-साथ यह स्पष्ट है कि उत्पादन लागत में क्षति अवधि के दौरान वृद्धि हुई थी। अतः जबकि उत्पादन लागत में वृद्धि के परिणामस्वरूप बिक्री कीमतों में वृद्धि होनी चाहिए थी इनमें इसके बजाय कमी आई है।

घरेलू उद्योग से संबंधित आर्थिक मानदंड

47. नियमावली के अनुबंध-11 में यह अपेक्षित है कि क्षति निर्धारण में इन आयातों का ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव की वस्तुनिष्ठ जांच शामिल होगी। इन आयातों का ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर परिणामी प्रभाव के संबंध में नियमावली में यह भी प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में उन सभी संगत आर्थिक कारकों और कारकों की निष्पक्ष एवं पक्षपात रहित जांच शामिल होनी चाहिए जिनका बिक्रियों में वास्तविक एवं संभावित कमी, लाभ, उत्पादन का बाजार हिस्सा, उत्पादकता, निवेशों पर आय अथवा क्षमता, उद्योग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह, निर्यातों पर वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश, मुटाने की योग्यता सहित घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

उत्पादन, बिक्रियां, क्षमता एवं क्षमता उपयोग और बाजार हिस्सा

वर्ष	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
क्षमता	मी. टन	28600	29000	31000	31000
उत्पादन	मी. टन	22433	25758	25169	26371
बिक्री मात्रा	मी. टन	21287	22900	23413	24014
क्षमता उपयोग	मी. टन	78.44	88.82	81.19	85.07
अप्रयुक्त क्षमता	मी. टन	6167	3242	5831	4629

48. यह नोट किया जाता है कि आवेदक के उत्पादन बिक्रियों, क्षमता एवं क्षमता उपयोग में बढ़ोतरी हुई है। इस प्रकार पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के पश्चात घरेलू उद्योग अपनी मात्राओं में सुधार करने में सक्षम रहा है। तथापि, यह पाया गया है कि आयात मात्राओं में परवर्ती वृद्धि से उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग में और अधिक वृद्धि नहीं हुई। जैसा कि नीचे देखा जा सकता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में मामूली गिरावट आई है।

वर्ष	इकाई %	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
घरेलू उद्योग	%	75.68	72.51	72.19	73.04
समर्थक	%	17.78	22.16	23.13	22.81
चीन	%	3.89	0.38	1.59	2.33
कथित यानांतरण	%	3.90	0.38	2.85	3.48
अन्य देश जिन पर पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है	%	0.00	0.00	1.14	0.68
अन्य देश	%	2.64	4.95	0.68	0.00
कुल	%	100	100	100	100

लाभ

वर्ष	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
प्रति इकाई कर पूर्व लाभ	रु./मी.टन	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	106.49	-11.65	-192.29
कर पूर्व कुल लाभ	रु./लाख	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	128.84	-12.58	-223.65
ब्याज एवं करों से पूर्व लाभ	रु./लाख	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	97.75	16.99	-116.09
बिक्री कीमत	रु./मी.टन	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	98.32	96.13	89.15
चीन जन.गण.से आयात	मी.टन	1095.00	121.00	516.80	764.80

49. घरेलू उद्योग के लाभ जिसमें मूल जांच के दौरान गिरावट आयी थी, में शुल्क लगाये जाने के पश्चात अत्यधिक सुधार हुआ। पाटनरोधी शुल्कों के सकारात्मक प्रभाव वर्ष 2002-03 की अवधि तक देखे जा सकते हैं। उसके पश्चात वर्ष 2003-04 के बाद जहां संबद्ध देश से पाटित आयातों में वृद्धि होनी शुरू हो गयी थी वहां घरेलू उद्योग के लाभ में गिरावट आनी शुरू हो गई थी और घरेलू उद्योग को जांच अवधि में एक बार फिर भारी वित्तीय घाटे का सामना करना पड़ा। प्राधिकारी संबद्ध देश से कुछेक यानांतरणों से घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभावों में सहायता मिलने की संभावना से इनकार नहीं करते हैं।

रोजगार

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	102	83	84

50. घरेलू उद्योग ने मुख्य रूप से वर्ष 2003-04 में रोजगार में कमी की थी जिसके बावजूद घरेलू उद्योग ने पूर्ववर्ती वर्ष में लाभ की स्थिति से इस वर्ष में एक बार फिर वित्तीय घाटे में बढ़ोतरी की है।

वेतन

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
गजवूरी	रु/लाख	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	115.93	114.42	114.13
प्रति इकाई उत्पादन मजदूरी	प्रति मी.टन	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	100.96	101.96	97.08

51. यद्यपि कुल भुगतान किये गए वेतन में वृद्धि हुई थी तथापि, उत्पादन के प्रति इकाई वेतन में गिरावट आयी थी। यह इस बात के बावजूद था कि वर्ष 2003-04 और जांच अवधि में लाभ में कमी आयी थी और उद्योग ने लाभ की स्थिति से घाटा वहन किया था।

उत्पादकता

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	102.54	83.94	84.10
उत्पादन	मी.टन	22433	25758	25169	28371
उत्पादकता	मी.टन	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	111.98	133.68	139.78

52. कर्मचारियों की संख्या में कमी और उत्पादन में वृद्धि होने के परिणामस्वरूप उत्पादकता में वृद्धि हुई थी। यद्यपि घरेलू उद्योग उत्पादकता में सुधार प्राप्त कर सका था तथापि इससे लाभप्रदता पर अनुकूल प्रभाव नहीं पड़ा था। इसके विपरीत यद्यपि वर्ष उत्पादकता में वर्ष 2003-04 में अत्यधिक सुधार हुआ था, तथापि इस अवधि में लाभ में सकारात्मक से नकारात्मक गिरावट हुई थी।

लाभ एवं निवेशों पर आय

स्रोत		2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
लाभ/हानि (पी बी आई टी)	रु/लाख	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	97.75	16.99	-116.09
निवेश पर आय (जी एफ ए)	%	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	95	15	-107
निवेश पर आय (एन एफ ए)	%	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100	94	15	-96

53. मूल जांच में घरेलू उद्योग को निवेशों पर नकारात्मक आय का सामना करना पड़ा था। पाटनरोधी शुल्क लगाये जाने के पश्चात इस स्थिति में अत्यधिक सुधार हुआ था। तथापि, निवेशों पर आय में वर्ष 2003-04 में तेजी से गिरावट आयी थी और यह जांच अवधि में एक बार फिर नकारात्मक हो गयी थी।

नकदी प्रवाह एवं नकद लाभ

54. सभी घरेलू उत्पादक बहु-उत्पाद कंपनियां हैं और संबद्ध उत्पाद की नकदी प्रवाह की स्थिति संबद्ध उत्पाद में स्थितियों की संकेतक नहीं होगी। इसलिए प्राधिकारी ने इन वर्षों के दौरान नकद लाभों की जांच की है और इसे नीचे दर्शाया गया है:-

स्रोत		2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
नकद लाभ	लाख रु	****	****	****	****
	सूचीबद्ध	100.00	128.19	9.38	-163.25

55. नकदी प्रवाह संबंधी स्थिति लाभों और निवेशों पर आय संबंधी स्थिति जैसी ही प्रवृत्ति प्रदर्शित करती है। नकद लाभों में वर्ष 2003-04 में तेजी से गिरावट आयी थी और यह जांच अवधि में एक बार फिर नकारात्मक हो गई थी। यह नोट किया जाता है कि यानांतरणों का वर्ष 2003-04 में पहली बार दावा किया गया था, संबद्ध देश से पाटित आयातों के भार में वर्ष 2004-05 में अत्यधिक वृद्धि हुई थी।

माल सुधियां

स्रोत	इकाई	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (जांच अवधि)
औसत स्टॉक	मी.टन	1193	1379	1733	1549
	सूचीबद्ध	100	116	145	130
स्टॉक में बिक्रियों के दिनों की सं०		20	22	27	24

86. घरेलू उद्योग के पास तैयार उत्पादों के औसत स्टॉक में आधार वर्ष की तुलना में 30 प्रतिशत की वृद्धि प्रदर्शित हुई और तत्काल पूर्ववर्ती वर्ष के दौरान 10.6 प्रतिशत की गिरावट प्रदर्शित हुई। जब अन्य मापदंडों के साथ संबद्ध किया गया तो यह पाया गया कि मालसूचियों में वर्ष 2003-04 में अत्यधिक वृद्धि हुई जब संबद्ध देश से पाटित आयातों में वृद्धि को पहली बार देखा गया था।

वृद्धि एवं पूंजी जुटाने की क्षमता

67. अनेक क्षति संबंधी मापदंड जांचाधीन अवधि के दौरान प्रतिकूल प्रवृत्ति प्रदर्शित करते हैं। अतः निम्नलिखित तालिका से यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के कार्य निष्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। यह देखा गया है कि जांच अवधि में घरेलू उद्योग अनेक मापदंडों के संबंध में नकारात्मक वृद्धि प्रदर्शित करता है पूंजी जुटाने की क्षमता के संबंध में यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग ने जांच अवधि के दौरान क्षमता में बढ़ोतरी की है जिसके लिए नये निवेश भी किए गए थे। तथापि, यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के हिस्से का निर्माण करने वाली सभी कंपनियां बहु उत्पाद कंपनियां हैं और इसलिए इस मापदंड के कारण क्षति अथवा इसके अभाव के संबंध में निष्कर्ष निकालना कठिन होगा।

		2002-03	2003-04	2004-05
बिक्री मात्रा में वृद्धि	%	7.57	2.24	2.57
कारोबार में वृद्धि	%	5.77	-0.04	-4.88
प्रति इकाई बिक्री कीमत में वृद्धि	%	-1.68	-2.23	-7.26
प्रति इकाई सी ओ पी में वृद्धि	%	-2.13	4.34	2.61
प्रति इकाई लाभ/हानि में वृद्धि	%	6.49	-110.94	-1550.55
लाभ में वृद्धि (पी की आई टी)	%	-2.25	-82.62	-783.43
उत्पादन में वृद्धि	%	14.82	-2.29	4.77
नकद लाभ में वृद्धि	%	28.19	-92.68	-1840.01
मालसूचियों में वृद्धि	%	-15.55	26.69	-10.64

पाटन मार्जिन की मात्रा

68. प्राधिकारी ने चीन से आयातों के मामले में अत्यधिक सकारात्मक पाटन मार्जिन पाया है। चीन से उत्पादक/निर्यातक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के पश्चात् भी भारतीय बाजार में अपने माल का पाटन करते रहे। वास्तव में पाटन मार्जिन के स्तर में बढ़ोतरी हुई है जैसा कि निम्नलिखित तालिका से देखा जा सकता है:-

	पाटन मार्जिन %
मूल जांच	71.5-85.68
वर्तमान समीक्षा जांच	91.25

59. कारणात्मक संबंध और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाये गए अन्य मुद्दे तथा प्राधिकारी द्वारा जांच

- (क) यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति निर्यातों के कारण हुई है। यह भी निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग के निर्यातों की मात्रा में वृद्धि हुई है और इसलिए मात्राओं के लिहाज से घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है। तथापि, यह माना जाता है कि प्राधिकारी ने केवल घरेलू बिक्रियों के संबंध में कीमत संबंधी मापदंडों की जांच की है और घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ के निर्धारण के लिए घरेलू उद्योग के निर्यात लाभों को अलग-अलग किया गया है।
- (ख) यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति पुरानी एवं मंहगी उत्पादन की प्रक्रिया के कारण हुई है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत का निर्धारण प्रत्येक कंपनी के लिए अलग-अलग किया है। इसके अलावा, ट्रांसपेक के संबंध में प्राधिकारी ने दो संयंत्रों के लिए क्षतिरहित कीमत का अलग-अलग निर्धारण किया है। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षति रहित कीमत से यह प्रदर्शित नहीं होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति जिक रूट उत्पादन के कारण हुई है।
- (ग) यह निवेदन किया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति भारतीय उत्पादकों के बीच आंतरिक प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है। जांच के पश्चात यह नोट किया जाता है कि जांच में यह बात प्रदर्शित नहीं हुई है कि घरेलू उद्योग को क्षति कथित आंतरिक प्रतिस्पर्धा के कारण हुई है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारतीय उत्पादक दो प्रक्रियाओं से उत्पादित वस्तुओं के लिए बहुत अधिक विभेदकारी कीमतें वसूल करने में सक्षम हैं। यह भी नोट किया जाता है कि आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अत्यधिक कम है। वास्तव में जांच अवधि के भीतर यह पाया गया है कि प्रचलित पाटनरोधी शुल्कों को जोड़ने के बाद आयातों की पहुँच कीमत भी घरेलू उद्योग की निवल बिक्री वसूली से कम है। अरविन्द मिल्स द्वारा दाखिल किए गए जवाब से यह बात भी प्रदर्शित होती है कि कंपनी द्वारा किए गए आयातों की पहुँच कीमत घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत से अत्यधिक कम है।
- (घ) यह निवेदन किया गया है कि चीन में क्षमता, खपत एवं अधिशेष बगैर किसी साक्ष्य के हैं। जांच के पश्चात यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने चीन में क्षमता, खपत एवं अधिशेष के संबंध में जांच परिणामों को सर्वोत्तम उपलब्ध सूचना पर आधारित किया है। यह नोट किया जाता है कि न तो चीन उत्पादकों, न ही भारतीय आयातकों/ग्राहकों न ही अरविन्द मिल्स ने ऐसा कोई साक्ष्य प्रदान किया है जिससे इस बात की पुष्टि हो सकती कि याचिकाकर्ताओं द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना गलत थी। तथ्यात्मक स्थिति की जांच करने के लिए निम्नलिखित वेबसाइटें देखी गई थी। यह भी नोट किया जा सकता है कि यह सूचना सम्पूर्ण नहीं है और इसलिए चीन में वास्तविक क्षमता और उपलब्ध अधिशेष इस सूचना से आकलन की गई क्षमता और अधिशेष से बहुत अधिक हो सकते हैं।

<http://www.greenapple.net.cn/english/index.htm>

<http://www.greenapple.net.cn/english/Sodium%20Hydrosulfite.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/product.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/supplying.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/about.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/sodium.htm>

<http://www.zhongcheng-chem.com/index.html>

<http://www.zhongcheng-chem.com/chanpine.htm>

(ड.) यह अनुरोध किया गया था कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को भिन्न-भिन्न उत्पादन प्रक्रियाओं के जरिए उत्पादित वस्तुओं की पृथक्-पृथक् गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण करना चाहिए। इस सम्बन्ध में यह नोट किया जाता है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वस्तुतः प्रत्येक कंपनी तथा प्रत्येक संयंत्र के लिए पृथक्-पृथक् गैर क्षतिकारी कीमत का निर्धारण किया है। अतः निर्धारित गैर क्षतिकारी कीमत दोनों प्रक्रियाओं के लिए पृथक्-पृथक् है।

(च) यह प्रस्तुत किया गया था कि जिक रूट तथा हाइड्रो रूट के जरिए उत्पादित संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत में कोई अन्तर नहीं है। आंकड़ों की जांच के पश्चात् यह विचार किया गया था कि वक्तव्य वस्तुतः गलत है। सत्यापित जांच से स्पष्ट पता चलता है कि जिक रूट तथा हाइड्रो रूट के जरिए उत्पादित संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमत अत्यधिक भिन्न है। विशेषकर प्राधिकारी ने जांच अवधि के लिए ट्रांसपेक द्वारा उपलब्ध कराई गई बिक्री संबंधी सौदेवार सूचना की ब्यौरेवार जांच की तथा इससे यह पता चलता है कि भिन्न-भिन्न प्रक्रियाओं के जरिए उत्पादित संबद्ध वस्तु की बिक्री कीमतों में अत्यधिक अन्तर है।

(छ) यह प्रस्तुत किया गया था कि प्रौद्योगिकी में विकास के कारण घरेलू उद्योग में क्षति हुई है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि हाइड्रो प्रक्रिया के जरिए उत्पादन, प्रौद्योगिकी में परिवर्तन नहीं है। मूल जांच के समय घरेलू उद्योग भी दोनों प्रौद्योगिकियों के साथ सह-विद्यमान थी। हाइड्रो प्रक्रिया में कथित लाभ के बावजूद जांच से यह नहीं पता चलता कि भारत अथवा चीन अथवा अन्य देश में जिक रूट के जरिए उत्पादन में गिरावट आई है। प्राधिकारी मानते हैं कि हाइड्रो प्रक्रिया की विद्यमानता प्रौद्योगिकी में विकास नहीं है। वस्तुतः यह पाया गया है कि ट्रांसपेक को हाइड्रो प्रक्रिया के जरिए उत्पादित उत्पाद में अधिकतम सीमा तक क्षति हुई है।

क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति की संभावना

60. प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति की संभावना की जांच की जिसके लिए निम्नानुसार सूचना/दावों पर विचार किया गया था।

विद्यमान उपायों के साथ आयातों तथा प्रभावी कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री

61. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से पाटित आयात लागू शुल्क के बावजूद भारतीय बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कीमत कटौती कर रहे हैं। यह संभावना है कि यदि विद्यमान पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो कीमत कटौती के दायरे में अत्यधिक वृद्धि हो सकती है।

घरेलू उद्योग की संवेदनशीलता

62. घरेलू उद्योग की संवेदनशीलता की जांच करते समय प्राधिकारी ने आयात की प्रवृत्तियां तथा विभिन्न क्षति संबंधी मानदण्डों के परिप्रेक्ष्य में घरेलू उद्योग पर इनके परिणामी प्रभाव पर विचार किया। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कथित यानांतरित आयातों की उपस्थिति तथा सीधे यानांतरण में वृद्धि के साथ घरेलू उद्योग ने लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में अत्यधिक गिरावट की बात कही है। जांच अवधि में सीधे तथा कथित यानांतरित आयातों, दोनों में अत्यधिक वृद्धि के साथ लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में अत्यधिक गिरावट आई।

चीनी उत्पादकों के पास मुक्त रूप से प्रयोज्य उत्पादन क्षमता

63. अभिलेख में दर्ज सूचना के अनुसार चीनी उत्पादकों के पास अधिक उपलब्ध क्षमता को निम्नानुसार संक्षिप्त किया गया है :-

कुल ज्ञात क्षमता	478000
निर्यात (क)	85937
घरेलू मांग (ख)	165000
अतिरिक्त क्षमता	227063
उपयुक्त संभावित प्रचालन दर	80%
उत्पादन (ग)	382400
अतिरिक्त उत्पादन (ग-क-ख)	131463

यह नोट किया गया है कि चीनी उत्पादकों के पास अत्यधिक मुक्त रूप से प्रयोज्य क्षमताएं हैं। प्रयोज्य उपलब्ध क्षमता समग्र भारतीय मांग से अत्यधिक ज्यादा है।

वर्तमान पाटन मार्जिन का स्तर

64. पाटन मार्जिन तब भी अत्यधिक है जब पाटनरोधी शुल्क लागू है। पूर्ववर्ती संपन्न जांच में भी प्राधिकारी ने अत्यधिक पाटन मार्जिन पाया था।

विदेशी उत्पादकों की निर्यातानुमुखता

65. यह प्रस्तुत किया गया है कि चीन में उत्पादकों ने अपनी घरेलू मांग से काफी ज्यादा क्षमता निर्मित की है। इसके अलावा, संबद्ध वस्तु के व्यापक स्तर पर कई उत्पादक हैं जो एक दूसरे से बहुत आक्रामक ढंग से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, न केवल घरेलू बाजार में बल्कि निर्यात बाजारों में भी तथा तीसरे देश के बाजारों में बाजार हिस्सा प्राप्त करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं। वेबसाइटों में से एक वेबसाइट से यह नोट किया गया था कि चीन में उत्पादकों में एक ने यह दावा किया था कि वे 60 से अधिक देशों को निर्यात कर रहे हैं (www.zhongcheng.gd.cn/english)। घरेलू खपत को घटाने के पश्चात क्षमताएं घरेलू मांग से अत्यधिक उच्चतर हैं जो यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि निर्यात बाजारों को ध्यान में रखते हुए व्यापक क्षमताओं का सृजन किया गया है। इसके अलावा, चीन से निर्यातों के संबंध में प्राधिकारी को उपलब्ध कराई गई सूचना निम्नानुसार सारणीबद्ध है :

देश	2002-03		2003-04		2004-05	
	मी. टन	दर अमरीकी डालर/ मी. टन	मी. टन	दर अमरीकी डालर/ मी. टन	मी. टन	दर अमरीकी डालर/ मी. टन
विश्व	7068 4	535.52	8468 1	477	8593 7	547
भारत	563	517.45	1175	437	972	544

66. अतः यह विचार किया गया है कि जब चीनी निर्यात बढ़ रहे हैं तब भी चीनी उत्पादक मुक्त रूप से उपलब्ध अप्रयुक्त प्रयोज्य क्षमताओं का सामना कर रहे हैं।

हितबद्ध पक्षकारों द्वारा की गई अन्य टिप्पणियां तथा प्राधिकारी द्वारा उनकी जांच

67. अरविन्द मिल्स द्वारा उनके अभ्यावेदन में यह तर्क दिया गया है कि मै. टीसीपी लिमि. तथा मै. गुलशन केमिकल्स ने लाभ दर्शाया है जबकि अन्य भागीदारी कंपनियों ने वित्तीय घाटा दर्शाया है। यह भी प्रस्तुत किया गया है कि टीसीपी लिमिटेड द्वारा उनके रसायन प्रभाग के लिए प्रकाशित वित्तीय परिणाम तथा गुलशन केमिकल्स की वार्षिक रिपोर्ट जांचाधीन अवधि के लिए लाभ दर्शाती है। यह भी जोड़ा गया है कि घाटा दर्शाने वाली भागीदार कंपनियों तथा लाभ दर्शाने वाले समर्थकों में स्पष्ट विरोधाभास है। इसका कारण यह तथ्य हो सकता है कि आवेदक संबद्ध वस्तु के उत्पादन के लिए जिंक रूट का प्रयोग कर रहे हैं जबकि समर्थक सोडियम फॉर्मेट रूट का प्रयोग कर रहे हैं और फलस्वरूप घाटा उठा रहे हैं। यह भी जोड़ा गया कि यद्यपि गुलशन केमिकल्स ने 2004-05 के दौरान लाभ में गिरावट दर्शायी है तथापि यह अन्य कारणों यथा उच्च अवमूल्यन लागत तथा आधिकारिक ऋण पर ब्याज के कारण हो सकता है जो कि पूर्ववर्ती वर्ष में नहीं थी। घरेलू उद्योग ने इन टिप्पणियों का यह कहते हुए प्रतिवाद किया है कि गुलशन केमिकल्स के निष्पादन की प्राधिकारी

द्वारा जांच की जा सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि समर्थक कंपनी अर्थात् मै. गुलशन कैमिकल्स के निष्पादन पर संबद्ध देश से पाटन के कारण प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

68. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की जांच की। आयातकों के अनुरोधों के संबंध में यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग की प्रश्नावली में यथाउल्लिखित सूचना को उपलब्ध कराने हेतु मै. गुलशन कैमिकल्स को पत्र लिखे। तथापि, मै. गुलशन कैमिकल्स से ऐसा कोई सहयोग नहीं मिला। आगे यह नोट किया जाता है कि संबद्ध कंपनी के दूसरी बहु उत्पाद कंपनी होने के कारण (यह संबद्ध वस्तु के अतिरिक्त सोडियम सल्फाइट का उपोत्पाद के अलावा भी उत्पादन करती है) प्राधिकारी के लिए संबद्ध वस्तु से संबंधित क्षति संबंधी मानदण्डों का निर्धारण एवं सत्यापन करना संभव नहीं है क्योंकि तुलन पत्र में दी गई सूचना यह इंगित नहीं करती कि सूचना केवल संबद्ध वस्तु से संबंधित है। उपर्युक्त के आधार पर मै. गुलशन कैमिकल्स की एक व्यापक जांच इस तथ्य के कारण संभव नहीं हो सकती कि उन्होंने इस संबंध में उन्हें भेजे गए अनुस्मारकों के बावजूद इस जांच में सहयोग नहीं किया है।

क्षति के जारी रहने तथा पुनरावृत्ति के बारे में निष्कर्ष

69. विभिन्न क्षति मानदण्डों के परिपेक्ष्य में घरेलू उद्योग की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि घरेलू उद्योग के निष्पादन में लाभ, नकद प्रवाह, निवेश पर आय, भण्डार सूची के रूप में गिरावट आई थी। घरेलू उद्योग के लाभ में भौतिक रूप से इतनी गिरावट आई कि ब्याज तथा अवमूल्यन पूर्व लाभ 2003-04 तक की सकारात्मक स्थिति की तुलना में जांच अवधि में नकारात्मक हो गए। घरेलू उद्योग की समग्र वृद्धि नकारात्मक थी। कीमत कटौती पाटनरोधी शुल्क के प्रचलित स्तर को शामिल करने के बावजूद सकारात्मक थी। घरेलू उद्योग के निष्पादन में उत्पादन, घरेलू बिक्री मात्रा, उत्पादकता, मजदूरी आदि के रूप में सुधार आया हालांकि इन मानदण्डों में सुधार लाभ, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में नकारात्मक सुधार द्वारा भरपाई होने से अधिक था। अनुबंध-॥ के तहत विभिन्न अपेक्षाओं पर विचार करते हुए प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को सतत क्षति हुई है।

70. वर्तमान जांच निर्णायक समीक्षा (सनसेट रिव्यू) है तथा घरेलू उद्योग की क्षति का जारी रहना तथा पुनरावृत्ति की निर्णायक समीक्षा के तहत अपेक्षाओं के संदर्भ में जांच की जानी अपेक्षित है। इस सम्बन्ध में यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से पाटित आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में पहले ही अत्यधिक सीमा तक कीमत कटौती कर रहे हैं तथा यदि वर्तमान शुल्क को रद्द किया जाता है तो कीमत कटौती के दायर में आगे और वृद्धि होगी जिसकी अधिक संभावना है तथा जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग की क्षति में आगे और वृद्धि होगी। आगे यह नोट किया जाता है कि कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री दोनों तब भी सकारात्मक थीं जब शुल्क लागू था।

71. इसके अलावा, घरेलू उद्योग का निष्पादन पहले ही जांच अवधि के दौरान प्रतिकूल था तथा यह संभावना है कि पाटनरोधी उपाय के बिना संबंधित उत्पाद की पर्याप्ततः बढ़ी हुई मात्रा भारतीय बाजार में बहुत कम कीमत पर यानांतरित कर दी जाएगी जिससे घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती होगी। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग अन्य देशों से पाटित आयातों के परिणामस्वरूप पहले ही वास्तविक क्षति का सामना कर रहा है तथा चीन जन. गण. पर लगे वर्तमान पाटनरोधी शुल्क को हटाने से भारतीय बाजार में और कीमत मंदी आएगी क्योंकि घरेलू उद्योग के

समक्ष इस बात के अलावा और कोई विकल्प नहीं होगा कि वह पहले अपने बाजार हिस्से की बरकद्वार रखे न कि अपना उत्पादन घटाए। इससे घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में आगे और कमी आएगी। इसके अतिरिक्त, पाटनरोधी शुल्क हटाने तथा उत्पाद की कीमत संवेदनशीलता की स्थिति में आयातित सामग्री तथा घरेलू सामग्री के बीच प्रभावी कीमत अन्तर के परिणामस्वरूप उपभोक्ता व्यापक रूप से आयातों की ओर उन्मुख होंगे।

72. यह नोट किया जाता है कि प्राधिकारी को यह जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातों में निरपेक्षतः अथवा आयातक देश में उत्पादन या खपत की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। तथापि, यह मानते हुए कि वर्तमान जांच निर्णायक समीक्षा है, यहाँ यह जांच करना प्रासंगिक है कि क्या पाटनरोधी शुल्क के हटाए जाने की स्थिति में अत्यधिक मात्रा में पाटित कीमतों पर आयातों का होना जारी रहेगा। पूर्ववर्ती पैराग्राफ में यथाउल्लिखित चीन जन. गण. से निर्यातक के पास अतिरेक क्षमता पर विचार करते हुए इस तथ्य के मद्देनजर यह अत्यधिक संभावित स्थिति है कि चीनी निर्यातकों द्वारा अन्य देशों को व्यापक निर्यात किए गए हैं तथा भारत को निर्यात अन्य बाजारों को उनके निर्यात की तुलना में कम है। यह भी नोट किया जाता है कि भारत को उनकी निर्यात कीमतों का स्तर भी घरेलू उद्योग की कीमतों में लगातार कमी कर रहा है। इसके अलावा, घरेलू उद्योग की लाभप्रदता, नकद प्रवाह तथा निवेश पर आय में अत्यधिक गिरावट आ सकती है यदि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तथा इस प्रकार घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

73. उपर्युक्त जांच के आधार पर यह पाया गया है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति का होना जारी है तथा यदि संबद्ध देश से पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो क्षति के जारी रहने की संभावना है।

छ. निष्कर्ष

74. प्राधिकारी उपर्युक्त पर विचार करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि :

(क) संबद्ध वस्तु का चीन जन. गण. से भारत को निर्यात इसके सामान्य मूल्य से कम पर किया गया है जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है तथा यदि संबद्ध देशों से पाटनरोधी शुल्क हटाया जाता है तो चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तु के पाटन के जारी रहने की संभावना है।

(ख) घरेलू उद्योग को चीन जन. गण. से संबद्ध वस्तु के पाटित आयातों के कारण वास्तविक क्षति का सतत सामना करना पड़ा है।

(ग) प्राधिकारी यह उपर्युक्त मानते हैं कि चीन जन. गण. से आयातों के सम्बन्ध में यथासंशोधित पाटनरोधी शुल्क लगाया जाना है क्योंकि इसे हटाने से पाटन तथा क्षति जारी रहेगी।

75. इसलिए प्राधिकारी चीन जन. गण. के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सोडियम हाइड्रोसल्फाइट (एसएचएस) के आयातों पर यथासंशोधित पाटनरोधी शुल्क को जारी रखने की सिफारिश को उपर्युक्त मानते हैं। पाटनरोधी शुल्क की राशि पाटन के मार्जिन अथवा क्षति के मार्जिन, जो भी कम हो तथा जिसे यदि लगाया जाए तो उससे घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त हो

सिफारिश को उपयुक्त मानते हैं। पाटनरोधी शुल्क की राशि पाटन के मार्जिन अथवा क्षति के मार्जिन, जो भी कम हो तथा जिसे यदि लगाया जाए तो उससे घरेलू उद्योग की क्षति समाप्त हो सके, के बराबर होगी। प्राधिकारी ने निर्धारित किया है कि क्षति मार्जिन, दोनों मार्जिनों में कमतर है। क्षति मार्जिन के निर्धारण के प्रयोजनार्थ आयातों के पहुंच मूल्य की जांच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की गैर क्षतिकारी बिक्री कीमत के साथ तुलना की गई है। पाटनरोधी शुल्क नीचे कालम 9 में उल्लिखित रकम तथा अमरीकी डालर/मी. टन में आयातों के पहुंच मूल्य के बीच के अन्तर होगा बशर्ते प्रति मी. टन पहुंच मूल्य नीचे कॉलम 9 में निर्दिष्ट रकम से कम हो।

क्र. सं.	उप शीर्ष	वस्तु का विवरण	विनिर्देशन	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	राशि	माप की इकाई	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	2831 एवं 2832	सोडियम हाइड्रोसल्फाइड	सभी ग्रेड	चीन जन. गण.	कोई देश	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	1063.11	मी. टन	अम. डालर
2	2831 एवं 2832	सोडियम हाइड्रोसल्फाइड	सभी ग्रेड	कोई देश	चीन जन. गण.	कोई उत्पादक	कोई निर्यातक	1063.11	मी. टन	अम. डालर

76. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम 1962 के तहत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलनीय मूल्य तथा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 तथा 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सीमाशुल्क के सभी शुल्क होगा।

77. केन्द्र सरकार के आदेश के विरुद्ध कोई अपील उपर्युक्त अधिनियम के अनुरूप सीमाशुल्क, उत्पाद शुल्क तथा सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष लाई जाएगी।

क्रिस्टी एल. फेर्नान्डेज, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)

NOTIFICATION

New Delhi, the 6th September, 2006

Subject : Sunset Review of Anti-Dumping duties imposed on imports of Sodium Hydrosulphite (SHS) originating in or exported from China PR—Final Findings

No. 15/16/2005-DGAD.—A. Background of the Case and Procedure followed

The Designated Authority, having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Duty or Additional Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, recommended imposition of provisional Anti Dumping duty on imports of Sodium Hydrosulphite (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from China PR (referred to as subject country) falling under Sub-heading 283110 and 283210. The preliminary findings were published vide Notification No 39/1/2000-DGAD dated 2/1/2001 and provisional duty was imposed on the subject goods vide Customs notification No. 28/2001-Customs dated 12th March 2001. The Designated Authority came out with final findings on 13th September 2001 vide notification no 39/1/2000-DGAD and definitive anti dumping duty was imposed by Customs as per notification No. 114/2001-Customs dated 2nd November 2001.

2. The Designated Authority initiated the sunset review investigation of anti-dumping duty imposed on imports of Sodium Hydrosulphite (SHS) originating in or exported from China PR (hereinafter also referred to as subject country) following a request to this effect by the Domestic Industry namely M/s Transpek Silox Industry Ltd and M/s Demosha Chemicals Pvt Ltd and supported by M/s TCP Ltd and M/s Gulshan Chemicals Ltd. The request was based on the grounds that the expiry of the measures would be likely to result in a continuation or recurrence of dumping and injury to the domestic industry. The allegation of continuation of dumping in

respect of China PR was based on a comparison of a normal value (price from USA to Belgium was considered at that stage) with the export prices of the product concerned to India. On this basis, the dumping margin calculated was considered significant.

3. The applicants further alleged likelihood of further injurious dumping. In this respect, the applicant presented some evidence that, should measures be allowed to lapse, the likely prices of the imports from the country concerned would undercut the domestic industry's prices in the short and the medium term. Furthermore, the applicant presented evidence that the current import level of the product concerned is likely to increase substantially due to the existence of unused capacity and the recent investments in production capacity in the country concerned. In addition, the applicant alleged that any recurrence of substantial imports at dumped prices from the country concerned would likely lead to a recurrence of further injury of the domestic industry should measures be allowed to lapse. The evidences presented by the applicants with regards to continuation and recurrence of dumping and injury were considered prima facie significant by the Authority. This sunset review was accordingly initiated vide notification no. 15/16/2005-DGAD dated 4th October 2005.

4. The Designated Authority sent a copy of initiation notification to the embassy of subject country, the known exporters, importers and the domestic industry as per the list available in the findings of the original anti-dumping investigation and requested them to make their views known in writing within 40 days of the initiation of this review investigation. A copy of the application filed by the domestic industry along with the relevant questionnaires were also sent to all interested parties in terms of anti dumping rules requesting them to respond in the form and manner as per the relevant questionnaires. None of the exporters responded to the initiation notification as well as to the application filed by the domestic industry requesting continuation of anti dumping duty. None of the importers except M/s Arvind Mills have filed the response to the importers questionnaire in the form and manner as prescribed therein. However, some of the importers have submitted some arguments, which have been analyzed in detail by the designated Authority to the extent they have been found relevant to the investigation.

5. The investigation of dumping and injury covered the period from 1st April 2004 to 31st March 2005 also called the Period of Investigation or POI. The examination of trends in the context of injury analysis covered the period from 1st April 2001 to the end of the period of investigation (also called the period under consideration or injury period). The import data has been examined from the transaction wise data made available by the DGCI&S and secondary sources namely Eximkey and the import quantity and value of imports from subject countries have been determined through

the transaction wise DGCI&S data and secondary sources namely Eximkey. (Wrongly mentioned as Eximnet in the Disclosure Statement).

6. **** in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the rules.

7. The Authority kept available the non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties.

8. The Authority sought and verified all the information it deemed necessary for the purpose of final finding with regard to dumping, injury and causal link. The Authority conducted on-the-spot investigation of the domestic industry to the extent considered necessary. The cost of production of domestic industry was also analyzed to work out the best cost of production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of GAAP based on the information furnished by the applicant so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

9. In accordance with Rule 6(6), the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 1st March 2006. The parties, which presented their views in the public hearing, were requested to file written submissions of the views expressed. In accordance with Rule 16 of the anti-dumping Rules, the essential facts/basis considered for these findings were disclosed to the known interested parties and comments received on the same are duly examined in the final findings. It may also be mentioned that subsequent to the issue of the disclosure statement. One of the importer M/s Arvind Mills sought more time to reply to the disclosure statement and also sought the permission to examine the public file. The Authority after examining the request allowed the importer an extension of time by one week and also allowed the examination of the public file. The response of M/s Arvind Mills is duly taken into account in this final finding.

B. Product Under Consideration

10. The product under consideration involved in the original investigation and also in the present sunset review investigation is Sodium Hydrosulphite. Sodium Hydrosulphite is a white or grayish white crystalline powder, free from visible foreign particles with pungent odour. Its chemical formula is $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_4$. Sodium Hydrosulphite is being produced by applying two manufacturing processes namely "Zinc Process" and "Sodium Formate Process". Cost of production and the value of the output in both

these processes are different. Cost of production and sales realisation in Zinc Process is on the higher side as compared to that of Sodium Formate Process. However, there is no difference in the consumer perception for the output of these two processes. Consumers use both products interchangeably. The producers in China also use "Zinc Process" and "Sodium Formate Process" for the manufacturing of Sodium Hydrosulphite. Sodium Hydrosulphite is an inorganic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act. The product is generally imported under subheading numbers 28311010 and 28321020. Sodium Hydrosulphite is widely used in diverse industrial sectors like Textiles, Soap, Molasses, Glue and reducing agent, disulphide of metal ions to metals, linkage in wool hair etc.

11. One of the importers, M/s Arvind Mills Ltd, has filed their submissions regarding product scope. It was argued by Arvind Mills that the difference in production process and difference in raw material renders different products and that Sodium Hydrosulphite produced by using Sodium Formate Route and Zinc Process need to be treated as two different products. Only producers in India adopted Zinc Process for the manufacture of subject goods which is costlier as compared to Sodium Formate Process. Accordingly Arvind Mills has requested a product scope review. Further it was submitted that for the purpose of fixation of NIP (Non Injurious price), the cost of production of Zinc Process should be discarded, as it is an expensive process. It was also submitted that separate NIP need to be fixed for subject product produced through different production processes. On the other hand, the domestic industry has alleged that the difference in the production process does not render the two products as dislike product. It has been further added by the domestic industry that M/s Arvind Mills itself has been buying products made from two processes from them. It has also been submitted by the domestic industry that the producers in China also use similar production process in the manufacturing of Sodium Hydrosulphite and have also set up capacity to produce Sodium Hydrosulphite through Zinc route process. It further establishes the fact that the production process used by Indian producers and Chinese producers are comparable and the subject product domestically manufactured and imported from subject country are "like articles" with in the meaning of anti dumping law. It was further added that the difference in the product types is a matter of price comparison. However, this is not feasible unless the Foreign Producers respond to the Designated Authority, as there is no way goods produced through two different process and exported to India can be segregated. The users also procure the products irrespective of the process adopted in the manufacturing of subject product.

12. The matter was examined and it was noted that the product under consideration involved in the original investigation and the present sunset review investigation is Sodium Hydrosulphite. Sodium Hydrosulphite is a white or grayish white crystalline powder, free from visible foreign particles with pungent odour. Its chemical formula is $\text{Na}_2\text{S}_2\text{O}_4$.

13. After examination of all the submissions and records, it is noted that internationally, different production process are used in the manufacture of Sodium Hydrosulphite. Zinc Route process and Sodium Formate process are prominent in India. In Zinc route, zinc dust constitute the main raw material and in Sodium Formate route, Sodium Formate constitute the main raw material. The differentiation in these two process is derived based on the difference in major raw material applied. It has been alleged by the domestic industry that producers in China too applies these two production processes and this submission has not been countered by any exporters from the subject country. Sodium Hydrosulphite is an inorganic chemical classified under Chapter 28 of the Customs Tariff Act. The product is further classified under subheading numbers 28311010 and 28321020.

14. It is further recognized that no single factor is conclusive in determining product scope and like goods. In determining like goods, the Authority generally considers technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification, prices, inter changeability, customer perceptions etc. Thus, it is clear that difference in production process applied to produce a product alone can not be sufficient to determine the output of these two process are unlike products. The end use of the subject product produced by applying different production process is same and there is no difference in the consumer perception for the output of these two processes. It was evident from the information submitted by the domestic industry along with evidence that the exporters in China applies these two production process in the manufacture of subject product. Thus, it is noted that the segregation of imported subject product into that produced by the particular production process may not be possible, as the exporters/importers have not provided the relevant information to the Authority. Moreover, it is equally not possible to identify from the import transaction the production process applied to produce the imported material. It is also noted that none of the exporters have responded in this investigations. On the basis of the foregoing, it is noted that the subject goods manufactured from both the processes mentioned above are included within the scope of the product under consideration.

C. Like Article

15. The applicants claimed that goods produced by Indian Producers are like article to the goods originating in or exported from subject country. Responding importers and/or consumers also did not dispute that the goods produced in India are like article to the imported product. The Authority in the original investigation also found that goods produced by domestic industry were like article to the goods originating in or exported from subject country. Even though it has been argued that zinc route and sodium formate route Sodium Hydrosulphite are different products, there is no argument that goods produced by the domestic industry are not like article to the imported article. Having examined all the available information on record, the Authority notes that subject goods produced by domestic industry have characteristics closely resembling to those of the goods imported from subject country. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicants and those exported from subject country within the meaning of like articles under Rule 2(d).

16. On the basis of the investigation, the Authority notes that subject goods produced by domestic industry has characteristics, which are similar to those imported from subject country and to those sold in the market of exporting country. There is no significant difference in the subject goods produced by the applicants and those exported from subject country. With regards to the like article, the Authority further notes that rule 2 (d) relating to the definition of like article specifies that like article means an article that is 'identical' or 'alike' in all respects to the articles under investigation or in the absence of such an article, another article having characteristics closely resembling those of the article under investigation. In order to establish that subject goods produced by the domestic industry is a Like Article to that exported from subject country, characteristics such as technical specifications, manufacturing process, functions and uses and tariff classification, prices etc have been considered by the Authority. After detailed examination, the Authority holds that Sodium Hydrosulphite produced by the domestic industry and those being imported from and sold in the subject country are like articles within the meaning of the rules.

D. Domestic Industry

17. There are four producers of subject product in India, namely M/s. Transpek Silox Industry Ltd., M/s Demosha Chemicals Pvt. Ltd., M/s TCP Ltd. and M/s Gulshan Chemicals Ltd. Petition for review, continuance and enhancement of anti dumping duty was filed jointly by M/s. Transpek Silox Industry Ltd. and M/s. Demosha Chemicals Pvt. Ltd. Other two producers, M/s TCP Ltd. and M/s Gulshan Chemicals Ltd. supported the petition. Subsequent to initiation, M/s TCP Ltd. has provided all relevant information with regard to injury to the Authority, which was subsequently verified. It is noted that production by Transpek Silox Industry Ltd., Demosha Chemicals Pvt. Ltd. and TCP Ltd. command significantly higher

than 50% in Indian production. A number of arguments were raised that Gulshan Chemicals Ltd. had not suffered any injury and the Authority should call for relevant information from this company also. Annual reports of the company were also made available to the Authority. The Authority requested M/s Gulshan Chemicals to provide relevant information. However, no reply was received from the company.

Rule 2(b) under the Rules provides as follows:-

"(b) "domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in which case [such producers may be deemed] not to form part of domestic industry"

Thus, in a situation where information with regard to domestic producers as a whole is not available, the Rules require the Authority to consider those producers whose collective output constitutes a major proportion of the total domestic production. Therefore, having regard to the legal provisions and facts & circumstances of the present case, the Authority considers that M/s Transpek Silox Industry Ltd., M/s Demosha Chemicals Pvt. Ltd., and M/s TCP Ltd. constitute domestic industry for the purpose of the present investigations within the meaning of the Rules. It may be mentioned here that the disclosure statement inadvertently states TCP as one of the petitioner companies. It is clarified that TCP is not one of the petitioner companies. TCP had supported the petition prior to initiation and provided sufficient injury information after initiation.

E. Continuation of Dumping

18. Under Section 9A(1)(c), normal value in relation to an article means:

- (i) the comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (ii) when there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either-

- (a) comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- (b) the cost of production of the said article in the country of] origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (6):

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transshipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin. According to the above, normal value means the price of like article in the domestic market of exporting country in ordinary course of trade.

a) Cooperation

19. None of the Chinese producers/exporters have responded to the exporters' questionnaire nor provided any other information with regard to the present investigations.

(b) Normal Value & Export Price

Arguments by interested parties

20. The petitioners requested Authority to treat China as a non-market economy under the provisions of the Rules. The applicants proposed USA as an appropriate surrogate country and normal value was estimated on the basis of export price from USA to Belgium. Factors like the fact that USA is the second largest producer of Sodium Hydrosulphite in the world, existence of significant competition in the US market, significant exports from USA, availability of relevant information for the purpose of normal value etc. were cited to claim that USA is an appropriate surrogate country. It was also argued by the domestic industry that other investigating agencies like European Union have treated USA as an appropriate surrogate country in a number of investigations concerning China. Alternatively applicants have submitted that price paid or payable in India, duly adjusted to include profit margin can be used to determine normal value in China. With regard to determination of export price, domestic industry has argued that Chinese materials are being

transshipped through Malaysia, Thailand and Indonesia and the same should be included for determination of volume and value of imports. M/s Arvind Mills, one of the importers & consumers who responded to the Authority contended that it is inappropriate to treat USA as a surrogate country as USA is a developed country and has suggested instead to treat the export price of Transpek Silox as an evidence of normal value. Arvind Mills has also argued that claim of transshipment by domestic industry are without evidence and are aimed at exaggerating the import volumes. Arvind Mills has also argued that possibilities of transshipments of materials of countries attracting anti dumping duties is not ruled out. No evidence to support the arguments have however been provided by Arvind Mills.

Examination by Authority

21. The Authority notes that none of the exporters have cooperated with the Authority. It is also noted that no claim has been made by Chinese producers with regard to market economy status nor any evidence provided as required by the Authority under para 8(3) of the Annexure I to the Rules. In the absence of relevant information from the Chinese producers, the Authority has proceeded in accordance with para 7 of the Annexure I to the Rules for all producers/exporters from China PR. With regard to various options available to the Authority to determine normal value in accordance with provisions of para 7, the Authority notes that it may not be appropriate to treat USA as surrogate country, as sufficient information is not available in this regard. Price or constructed value in a market economy third country is thus not available to the Authority. Export price from third countries to other countries, including India are also not adequately available. It is noted that the information provided by the applicant with regard to price from US to Belgium is not sufficient to determine normal value on this basis. In view of the above, the Authority holds that the normal value can be determined only on the basis of price payable in India, duly adjusted to include a reasonable addition for profit margin. This has been determined considering the cost of production of Indian Producers and adjusting the same appropriately. Reasonable profit has been added to the cost of production so determine to arrive at normal value in China.

22. With regard to export price, the Authority notes the arguments of various interested parties with regard to transshipments. The Authority notes that the domestic industry kept complaining before various authorities in Government of India about such transshipment of goods. An email apparently from a Thai trader is also provided to the Authority, which shows attempts to export the Chinese goods after change in the country of origin. Efforts were also made to ascertain whether or not the subject goods were indeed produced in these third countries by extensive web

searches which did not show that there was production facilities in these third countries.. Having regard to various facts & circumstances of the case and having regard to the information on record, the Authority considers it appropriate to exclude these transshipped goods for the purpose of determination of export price. However, their impact (both alleged volume as well as price) has been separately dealt with by the Authority. Accordingly, weighted average export price from subject country has been determined for China.

23. It has been contended by Arvind Mills that imported material is Sodium Hydrosulphite through sodium formate route. The Authority however notes that there is no evidence that the imported material is only from sodium formate route. No exporter from China PR has submitted any data or information about the production of the product in China PR and its exports to India. Evidence on record shows that goods are being produced through both the routes in China. The domestic industry provided transaction by transaction information with regard to exports from China, which also shows exports from China by a number of producers. It was also shown with evidence that producers in China PR produce the subject goods through both the routes. The Authority therefore holds that it would not be appropriate to hold that the imported material was only of sodium formate route.

24. The export price has been adjusted for Ocean Freight, Marine Insurance, Commission, inland freight, Port expenses, bank charges to determine ex-factory export price. The export price so determined comes as under:-

	CIF export price	Ex-factory export price
Exports from China (US\$/MT)	****	****

c) Dumping Margin:

25. Considering the normal value and export price determined so determined, dumping margin was established on the basis of a comparison of the weighted average normal value with the weighted average export price. The comparison showed the existence of dumping, as shown in the table below: -

	Dumping margin amount US \$	Dumping margin as % of ex-factory export price
Exports from China	****	91.25

26. It has been argued that normal value should be based on Gulshan's cost of production or export price of Transpek to third countries or export price from Malaysia, Indonesia or Thailand to India. It is also the argument of these interested parties that export price from USA to Belgium can not be taken. The Authority notes in this regard export price from USA to Belgium has not been considered for determination of normal value. Further, export price from Malaysia, Indonesia or Thailand to India could not be adopted in view of lack of evidence that there is in fact production in these countries. On the contrary, the domestic industry repeatedly argued that the goods were not being produced in these countries and exports reported from these countries were nothing but transshipment of Chinese material. Further, the Designated Authority could not adopt Gulshan's cost of production in the absence of sufficient cooperation from the company. In any case, the Authority notes anti dumping rules allow the construction of normal value consideration of cost of production in India along with reasonable addition for SGA expenses and profits as one of the reasonable basis and the Authority has adopted cost of production in India as the basis for determination of normal value.

Likelihood of dumping

27. In order to examine whether the dumping of the product under consideration is likely to continue or intensify with the revocation of anti dumping duties, the Authority has considered the following information/evidence.

Continued Dumping

a. The subject goods are continued to be imported at very low and dumped prices from China even after imposition of duties. There are no changes in the parameters/ circumstances prevailing at the time of original investigation and at present. In view of the above, the Chinese producers are likely to continue dumping of the product in the event of revocation of duties.

Surplus capacities with Chinese producers

b. The Capacities created by Chinese producers are claimed to be significantly higher than demand in their local market. Freely disposable capacities with the known Chinese producers as claimed are as follows:-

Name of the producer	Capacity (MT)
Guandong Zhongcheng Chemicals Co Ltd.	260000
Kingboard	50,000
Yantai Chloralkali	40,000

Anhui Chlor-Alkali Chemical Group Ltd. Co.	30000
Zhejiang Jai-sun chemical company Ltd.	80000
Wuxi Greenapple Chemical Industry Ltd.	18000
Total Known Capacity	478000
Exports (A)	85937
Domestic Demand (B)	165000
Excess Capacity	227063
Operating rate assumed considering the capacity utilization achieved by the Indian Producers	80%
Production (C)	382400
Excess Production (C-A-B)	131463
Freely disposable capacities	313000
Indian Demand (in POI)	33000

(from web site of individual companies as claimed by the domestic industry)

c. Since there is no rebuttal of the claim of the domestic industry by any of the exporters from China PR and in view of the records available with the Authority, it is considered that the freely disposable capacities in China are significantly higher than Indian demand.

Export Orientation of Chinese producers

d. Producers in China have capacities far in excess of their domestic demand. There are large-scale producers, claiming to be exporting to a large number of countries. One of the Chinese producers claimed to be exporting to more than 60 destinations in the world (www.zhongcheng.gd.cn/english). The information available with regard to Chinese exports are as follows:-

Country	2002-03		2003-04		2004-05	
	MT	Rate US\$/MT	MT	Rate US\$/MT	MT	Rate US\$/MT
World	70684	535.52	84681	477	85937	547
India	563	517.45	1175	437	972	544

The above shows increasing trends in Chinese exports. The Authority considers that the Chinese producers are export oriented and have significant freely disposable capacities.

Allegations of Transshipments to absorb ADD in force.

Producers alleged that the Chinese goods were being dumped from Malaysia, Thailand and Indonesia. Extensive web-search made by the Authority did not show an evidence that the subject goods are being produced in Malaysia, Thailand and Indonesia. There is no reason to suspect that the Chinese goods might be transshipped from Malaysia, Thailand and Indonesia. This is indicative of likelihood of continued importation with the revocation of measures.

The Authority examined various arguments advanced by all interested parties and on the basis of the examination made above, the Authority has determined that the subject goods have been exported to India at dumped prices and the dumping margin continues to be significant from China PR and the dumping is likely to continue if the anti dumping duty is withdrawn.

Injury

IEWS OF EXPORTERS, IMPORTERS, USERS

There has been no response from any Chinese producer/exporter, nor has any arguments been advanced on any aspect of the present investigations, including on injury & causal link from any exporters. Only M/s Arvind Mills, an importer, has filed response and raised a number of arguments, which are summarized below. The main arguments of the importers are that

- a) Domestic industry has not suffered any injury at all. It has also been submitted that a number of parameters affecting the domestic industry have shown improvements.
- b) The Indian Producers are suffering from internal competition and the injury may not be on account of dumped imports.
- c) Gulshan Chemicals is earning profits, whereas petitioner companies have reported financial losses.
- d) Indian Producers are faced with excess capacity resulting in injury to the domestic industry.
- e) Volume of imports during the period is negligible and remained insignificant in total demand in the Country, even after including transshipments.

- f) Applicant companies are multi product companies and therefore allocation and apportionment of expenses might have been incorrectly done to inflate injury.
- g) There is no causal link between dumping and injury.
- h) The industry would not have added capacity given financial losses situation.

F.2 VIEWS OF THE DOMESTIC INDUSTRY

30. The domestic industry has raised a number of arguments with regard to injury and causal link, which are summarized below. The main arguments are that

- a) The domestic industry has suffered continued injury due to dumping from China, which got aggravated with transshipment of goods from third countries.
- b) Performance of the domestic industry improved in respect of Sales, Production, Productivity and Capacity Utilization but deteriorated in respect of Sales Realization, Profits, Return on Investments, Market Share and Inventories. Overall, performance of the domestic industry did not materially improve after imposition of anti dumping duties.
- c) The performance of the domestic industry was expected to improve with the imposition of anti dumping duties. The same did happen sometime. However, practices such as circumvention caused continued injury to the domestic industry.
- d) Arvind Mills has not filed a response to questionnaire in the form and manner prescribed.
- e) Domestic industry is not suffering from internal competition, nor Indian Producers are faced with such huge utilized capacities that this could have caused injury to the domestic industry. Further, even if it is assumed that there was internal competition, the same only shows that the performance of the domestic industry would deteriorate further significantly should the present duties be withdrawn. It is also argued that fair internal competition should be distinguished with unfair competition caused due to dumping practices. Existence of significant differences in prices in respect of

material sold to various customers also establishes that the Indian Producers are not faced with cut throat internal competition. Above all, domestic industry disputed that the Designated Authority is required to examine whether internal competition caused injury to the domestic industry, as, according to the domestic industry, this is not a listed parameter. The listed parameter under the Rules is "competition between the foreign & domestic producers".

- f) Rules require the Designated Authority to consider "injury to the domestic industry". Assuming though not admitting that one or more of Indian Producers are earning profits while others are suffering financial losses, what is relevant to be noted is whether "domestic industry" is suffering material injury. The fact whether or not Gulshan Chemicals has suffered injury is wholly irrelevant, as the three companies constitute domestic industry. It has also been argued that Gulshan Chemicals has also suffered injury, as can be seen from the decline in profits of the company over the injury period.
- g) There is no situation of huge capacity imbalance. Further, capacity additions must be seen in the light of huge capacity additions announced by Arvind Mills.
- h) Volume of imports from China is neither de-minimus, nor insignificant. Further, transshipped imports can not be ignored. Above all, Rules do not require the Authority to determine whether imports were more than de-minimus or significant.
- i) Given the present situation and the facts that the Chinese producers are holding significant disposable capacities, Chinese imports would be significantly undercutting the prices of the domestic industry in the event of revocation of anti dumping duties and transshipment method used to export the material, it is evident that the exports would increase significantly, should the present anti dumping duties be withdrawn.
- j) Difference in starting raw material or production process has not adversely impacted the domestic industry. In fact, the domestic industry is faced with higher financial losses in case of sodium formate route product. Even though the goods produced through different processes are like articles, still, the producers are able to fetch different price realizations.
- k) Allegations with regard to possible inaccuracies in allocation/apportionment of expenses are without any basis. Not only that the Designated Authority conducted detailed verification,

but also the methodology followed in this case by Transpak-Solax was the same as was followed by the company in the case of investigations relating to sodium formaldehyde sulphonylate.

Examination by the Authority

Import statistics

31. The Authority notes that while the domestic industry alleged transshipments of Chinese goods and brought various evidence on record, M/s Arvind Mills disputed the claim of transshipment and even stated that such transshipment could be from other countries. The Authority recognizes that possibilities of transshipment of Chinese goods from other countries is not ruled out in view of the information made available by domestic industry. Also, Authority examined the claim of domestic industry with regard to transshipment from the viewpoint of assessment of both the actual and likely volume of dumped imports. Having regard to facts & circumstances of the case, the Authority has considered it appropriate to exclude the transshipments i.e imports reported from Thailand, Indonesia and Malaysia in import volumes reported from China in the analysis of the volume and price injury. This has been done taking into account the fact that the Authority does not have concrete evidence or data before it to enable it to take a view that all the imports from these countries are in fact originated in China PR. However, the Authority has separately examined the imports made from Thailand, Malaysia and Indonesia, as there are no known producers in those countries and also because of the fact that no exporters have come forward to rebut the claims of the domestic industry on transshipment. However, these exports have not been added to the exports from China PR in terms of volume or price. Further, the information on imports was called from the DGCI&S and also the secondary source information was made available by the domestic industry. Thus, Authority has taken into account the import volumes from subject country reported by DGCI&S and secondary source information i.e eximkey (www.eximkey.com).

32. It has been claimed that the Authority might have considered the same import entry twice. It is however clarified that possibility of use of the same import entry twice are ruled out, given that the Authority has relied upon transaction wise import data on the basis of clearance of the goods. It is also noted that there is no basis for the argument that the import volumes determined by the Authority should be the same as determined by the applicants in their application as as the import volume and value has been

reexamined in the light of the data received from DGCIS (updated) and secondary sources. It is noted from the response filed by Arvind Mills that the company has reported some import transactions which are not reported in the DGCIS data but included in Eximkey data.

33. It has been argued that transshipped imports can not be included. It is once again clarified that transshipped imports have not been taken into account in determining the demand and injury to the domestic industry.

34. It has been argued by some interested parties that the Authority has wrongly included TCP within the scope of the domestic industry. It has also been argued that the Authority should have included Gulshan Chemicals within the scope of the domestic industry. The Authority notes that inclusion of TCP within the scope of domestic industry is fully justified in view of the definition of domestic industry under Rule 2(b). It is confirmed that the information provided by TCP has been verified by calling further information and conducting on the spot investigations. The Authority also holds that Gulshan Chemicals could not be included within the scope of the domestic industry for the reason that the company has not responded to the Authority in spite of specific requests from the Authority. The Authority also notes that the Rules do not authorize the Authority to include those domestic producers who are unwilling to cooperate with the Authority.

35. It has been argued by some interested parties that injury to the domestic industry should be separately examined considering TCP and petitioners. The Authority however holds that the argument is without legal basis. Under Rule 2(b), domestic industry is defined as "domestic producers a whole" or those "whose collective output constitutes a major proportion". Thus, the Authority is required to consider all the companies collectively as rules do not envisage a distinction between petitioner and supporter in this regard.

36. It is claimed by some interested parties that injury to the domestic industry is due to zinc route production as cost from that route is higher. These interested parties have however failed to provide any evidence in support of this claim. Investigations have in fact revealed that Transpek which is engaged in production of both zinc route and hydro route product has suffered higher injury from production and sale of hydro route product.

Assessment of demand

37. For the calculation of the domestic consumption/demand of the product under consideration, the Authority added the sales volume of the domestic industry and other Indian producers to the total imports into India.

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
Sales of Domestic industry	21287	22900	23413	24014
Sales – Indexed	100.00	107.57	109.98	112.81
Sales of Other Indian Producers	5000	7000	7500	7500
Total Imports	1840	1683	1518	1365
Indexed	100.00	91.50	82.49	74.22
Demand	28127	31583	32430	32880
Demand – Indexed	100	112.29	115.30	116.90

The Authority notes that the demand has shown a positive trend and grew @ 16.90% over the injury period.

Import volumes and market share

38. With regard to the volume of the dumped imports, it has been examined whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. Annexure-II (ii) of the Anti-dumping rules provides as under :-

“While examining the volume of dumped imports, the said Authority shall consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India

39. After examination of the import data, it is noted that volume of dumped imports declined sharply in 2002-03 with the imposition of anti dumping duties. The volume however increased continuously in 2003-04 and 2004-05, as may be seen from the table below.

	UNIT MT	2001-02	2002-03	2003-04	POI
Imports					

Exports from China	1095.00	121.00	516.80	764.80
Alleged Transshipments	1.00	0.00	407.67	378.16
Other Countries attracting Anti Dumping Duty	0	0	371.05	222.47
Other Countries	743.65	1562.35	222.06	0
Total Imports	1839.65	1683.35	1517.58	1365.38
Market Share in Imports				
Exports from China	59.52	7.19	34.05	56.01
Alleged Transshipments	0.05	0.00	26.86	27.70
Other Countries attracting Anti Dumping Duty	0.00	0.00	24.45	16.29
Other Countries	40.42	92.81	14.63	0.00
Demand				
Market Share in Demand				
Exports from China	3.89	0.38	1.59	2.33
Alleged Transshipments	0.004	0	1.26	1.15
Other Countries attracting Anti Dumping Duty	0.00	0.00	1.14	0.68
Other Countries	2.64	4.95	0.68	0.00
Production of Domestic industry				
Imports in relation to production of domestic industry				
Exports from China	4.88	0.47	2.05	2.90
Alleged Transshipments	0.004	0.00	1.62	1.43
Other Countries attracting Anti Dumping Duty	0.00	0.00	1.47	0.84
Other Countries	3.32	6.07	0.88	0.00

40. It is noted that starting 2003-04, volume of dumped imports has increased significantly as compared to previous year. However, the total share of dumped imports from China PR in the investigation period reached back to the same level as that of the base year. It is also noted that in 2001-02, imports from China were significant. The domestic industry has provided letters filed by them with various Govt. authorities complaining misuse of the exemption granted to the EOUs from payment of anti-dumping duties.

Price effect of imports

41. With regard to the effect of the dumped imports on prices, it has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant

degree. In order to assess the effect of imports on the domestic market an analysis of import prices over the injury period was made, as shown below

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
CIF export price Rs/MT				
Exports from China	28547	28078	29079	25024
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			32931	34392
Other Countries	32208	31140	27414	
Customs duties	35%	30%	25%	20%
Landed price of imports				
Exports from China	38639	36586	36421	30079
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			41247	41340
Other Countries	43594	40575	34336	
Net sales realization of the domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100.00	98.32	96.13	89.15
Cost of production of the domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100.00	97.87	102.11	104.78

Price undercutting

42. It is noted that the imports were significantly undercutting the prices of the domestic industry in the market. Thus, it is noted that the present anti dumping duties are withdrawn, it is evident that the imports would significantly undercut the prices of the domestic industry in the market. The extent of price undercutting is shown in the table below: -

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
Price undercutting amount Rs/MT				
Exports from China	****	****	****	****
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			****	****
Other Countries	****	****	****	****
Price undercutting percentage				
Exports from China	15-25%	20-30%	15-22%	25-35%
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			8%	1%
Other Countries	-6.61	-11.60	-23.48	

43. While the above price undercutting were determined after excluding the level of present anti dumping duties in order to determine the likely impact of withdrawal of anti dumping duties, the Authority also examined the level of price undercutting with the current anti dumping duties in force. The position is as shown below:-

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
Price undercutting amount Rs/MT				
Exports from China	****	****	****	****
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			****	****
Price undercutting percentage %				
Exports from China	-5-10%	-2-8%	-2-10%	3-10%
Other Countries attracting Anti Dumping Duty			-5-10%	-10-20%

44. It is seen that dumped imports from China PR were undercutting the prices of the domestic industry in the investigation period even after adding the present level of anti dumping duties.

Price suppression/depression

45. In order to assess whether the imports from the subject countries were suppressing/ depressing the prices of the domestic industry, the Authority compared the trends in selling prices and cost of production, as seen in the table below.

	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05
Net sales realization of the domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100.00	98.32	96.13	89.15
Cost of production of the domestic industry	****	****	****	****
Indexed	100.00	97.87	102.11	104.78

46. It is found that the selling prices of the domestic industry were declining over the injury period. Thus, the prices of the domestic industry were depressed. At the same time, it is found that the cost of production had increased over the injury period. Thus, whereas the selling prices should have increased as a result of increase in cost of production, the same has rather declined. It is therefore concluded that the prices of the domestic industry were suppressed.

Economic Parameters relating to the Domestic Industry

47. Annexure II to the Rules requires that a determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such products. With regard to consequent impact of these imports on domestic producers of such products, the Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

Production, sales, capacity and capacity utilization and market share

Year	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Capacity	MT	28600	29000	31000	31000
Production	MT	22433	25758	25169	26371
Sales volumes	MT	21287	22900	23413	24014
Capacity Utilization	MT	78.44	88.82	81.19	85.07
Unutilized Capacity	MT	6167	3242	5831	4629

48. It is noted that production, sales, capacity and capacity utilization of the applicant has increased. Thus, the domestic industry has been able to improve its volumes after imposition of anti dumping duties. It is however found that the subsequent increase in import volumes prevented further growth in production, sales and capacity utilization. As is seen below, the market share of the domestic industry has declined marginally during the POI as compared to the base year.

Year	Unit %	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Domestic industry	%	75.68	72.51	72.19	73.04
Supporter	%	17.78	22.16	23.13	22.81
China	%	3.89	0.38	1.59	2.33
Alleged transshipments	%	3.90	0.38	2.85	3.48
Other Countries Attracting ADD	%	0.00	0.00	1.14	0.68
Other Countries	%	2.64	4.95	0.68	0.00
Total	%	100	100	100	100

Profit

Year	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Profit Before Tax per unit	Rs/MT	****	****	****	****
	Indexed	100.00	106.49	-11.65	-192.29
Total Profit before tax	Rs/Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100.00	128.84	-12.58	-223.65
Profit before interest & taxes	Rs/Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100.00	97.75	18.99	-116.09
Selling price	Rs/MT	****	****	****	****
	Indexed	100.00	98.32	96.13	89.15
Imports – from China PR	MT	1095.00	121.00	516.80	764.80

49. The profit of the domestic industry, which declined during the original investigation improved significantly after imposition of duty. The positive impacts of ADD are visible up to the period 2002-03. Thereafter, after 2003-03, whereas dumped imports from subject country started increasing, the profits of the domestic industry started declining and the domestic industry was once again faced with huge financial losses in the investigation period. The Authority does not rule out the possibility of the some of the transshipments from subject country aiding the adverse effects on the domestic industry.

Employment

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
No. of employees	Nos	****	****	****	****
	Indexed	100	102	83	84

50. The domestic industry reduced employment, primarily in 2003-04, in spite of which the domestic industry has increased

financial losses once again in this year from a situation of profit in the preceding year.

Wages

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Wages	Rs/Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100	115.93	114.42	114.13
Wages per unit of production	Per MT	****	****	****	****
	Indexed	100	100.96	101.98	97.08

51. While the total wages paid increased, wage per unit of production declined. This was despite the fact that profits declined in 2003-04 and POI and industry incurred losses from a situation of profits.

Productivity

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
No. of employees	Nos	****	****	****	****
	Indexed	100	102.54	83.94	84.10
Production	MT	22433	25758	25169	26371
Productivity	MT	****	****	****	****
	Indexed	100	111.98	133.66	139.78

52. Reduction in number of employees and increase in production resulted in increase in productivity. Though the domestic industry could achieve improvements in productivity, the same did not impact favorably on profitability. On the contrary, while productivity improved maximum in 2003-04, profits declined from positive to negative in this period.

Profit and Return on investments

Source		2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Profit/loss (PBIT)	Rs/Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100.00	97.75	16.99	-116.09

Return on investment (GFA)	%	****	****	****	****
	Indexed	100	95	15	-107
Return on investment (NFA)	%	****	****	****	****
	Indexed	100	94	15	-96

53. The domestic industry was faced with negative return on investment in the original investigation. The situation improved significantly after imposition of anti dumping duties. However, return on investment declined sharply in 2003-04 and once again became negative in the investigation period.

Cash Flow and cash profit

54. All the domestic producers are multi product companies and cash flow situation of subject product would not be indicative of the situations in the subject product. Hence the Authority has examined the cash profits over the years and the same is as shown below:-

Source		2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Cash Profit	Rs Lacs	****	****	****	****
	Indexed	100.00	128.19	9.38	-163.25

55. The position with regard to cash flow shows the same trend as that of profits and return on investments. Cash profits declined sharply in 2003-04 and once again became negative in the investigation period. It is noted that while transshipments were first claimed in 2003-04, the incidence of dumped imports from subject country increased significantly in 2004-05.

Inventories

Source	Unit	2001-02	2002-03	2003-04	2004-05 (POI)
Average stock	MT	1193	1379	1733	1549
	Indexed	100	116	145	130
No. of days sales in stocks		20	22	27	24

56. Average stock of finished products with the domestic industry showed 30% increases while comparing to the base year and showed 10.6% declines over the immediate previous year.

2777 37/06-8

When correlated with other parameters, it is found that the inventories increased significantly in 2003-04 when the surge in dumped imports from subject country were first noticed.

Growth and ability to raise capital

57. Large number of the injury parameters show adverse trend during the period under examination. It is thus noted from table below that the domestic industry's performance has been adversely affected. It is seen that the domestic industry shows negative growth in respect of a number of parameters in the investigation period. With regards to ability to raise capital, it is noted that the domestic industry has added capacity during the investigation period for which fresh investments were also made. However, it is also noted that all the companies forming part of the domestic industry are multi product companies and therefore it would be difficult to conclude injury or lack of it on account of this parameter.

		2002-03	2003-04	2004-05
Growth in Sales Volume	%	7.57	2.24	2.57
Growth in Turnover	%	5.77	-0.04	-4.88
Growth in Selling Price per unit	%	-1.68	-2.23	-7.26
Growth in COP per unit	%	-2.13	4.34	2.61
Growth in Profit/Loss per unit	%	6.49	-110.94	-1550.55
<u>M</u> Growth in Profits (PBIT)	%	-2.25	-82.62	-783.43
Growth in Production	%	14.82	-2.29	4.77
Growth in Cash Profit	%	28.19	-92.68	-1840.01
Growth in Inventories	%	15.55	25.69	-10.64

Magnitude of dumping Margin

58. The Authority has found significantly positive dumping margins in case of imports from China. The producers/exporters from China continued to dump their material in the Indian market even after imposition anti dumping duties. In fact, level of dumping margin has rather increased, as may be seen from the table below.

	Dumping margin %
Original investigations	71.5-85.68
Present review investigations	91.25

59. Causal link and other issues raised by interested parties and examination by the Authority

- a) It has been submitted that injury to the domestic industry is due to exports. It has been further added that volume of exports of the domestic industry have increased and therefore there is no injury to the domestic industry in terms of volumes. However, it is considered that the Authority has examined price parameters only in respect of domestic sales and export profits of the domestic industry have been segregated for determination of profits earned by the domestic industry.
- b) It has been submitted that injury to the domestic industry is due to outdated and expensive production process. In this connection, it is noted that the Designated Authority has determined non injurious price separately for each company. Further, in respect of Transpek, the Authority has determined non-injurious price separately for the two plants. The non-injurious price determined by the Authority does not show that injury to the domestic industry is due to zinc route production.
- c) It has been submitted that injury to the domestic industry is due to internal competition between the Indian Producers. After examination, it is noted that investigation has not shown that the injury to the domestic industry is due to alleged internal competition. The Authority notes that the Indian Producers are able to charge significantly different prices for the goods produced from the two processes. It is also noted that the landed price of imports is significantly below the selling price of the domestic industry. In fact, within the investigation period, it is found that the landed price of imports after adding prevailing anti dumping duties is also below the net sales realization of the domestic industry. Response filed by Arvind Mills also show that the landed price of imports made by the Company is significantly lower than the selling price of the domestic industry.
- d) It has been submitted that capacity, consumption and surplus in China is without any evidence. After examination, it is noted that the Authority has based findings with regard to capacity, consumption and surplus in China on the best information available. It is noted that neither the Chinese producers, nor Indian importers/consumers nor Arvind Mills has provided any evidence which could have established that the information provided by the petitioners was incorrect. The following websites were visited in order to

check the factual position. It may also be noted that this information may not be exhaustive and therefore actual capacity in China and surplus available may be far higher than what is assessed from this information.

<http://www.greenapple.net.cn/english/index.htm>

<http://www.greenapple.net.cn/english/Sodium%20Hydrosulfite.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/product.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/supplying.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/about.htm>

<http://www.zhongcheng.gd.cn/english/sodium.htm>

<http://www.zhongcheng-chem.com/index.html>

<http://www.zhongcheng-chem.com/chanpine.htm>

- e) It has been submitted that the Designated Authority should determine separate non injurious price for the goods produced through different production process. In this connection, it is noted that the Designated Authority has in fact determined separate non-injurious price for each company and for each plant. Thus, the non-injurious price determined is separate for the two processes.
- f) It has been submitted that there is no difference in the selling price of the subject goods produced through zinc route and hydro route. After examination of the data, it is considered that the statement is factually incorrect. The verified information clearly shows that the domestic industry has been able to get different prices of subject goods produced through zinc route and hydro route. In particular, the Authority examined in detail transaction wise information on sales provided by Transpek for the investigation period and the same shows that there is a significant variation in the selling price of the subject goods produced through different process.
- g) It has been submitted that developments in technology has caused the injury to the domestic industry. In this connection, it is noted that that production through hydro process is not a development in technology. At the time of original investigations also, the domestic industry coexisted with both the technologies. In spite of alleged advantage in the hydro process, the investigation has not shown that production through zinc route has declined either in India or in

China or in other countries. The Authority considers that existence of hydro process is not a development in technology. In fact, it is found that Transpek has suffered higher extent of injury in the product produced through hydro process.

Likelihood of continuation or recurrence of injury

60. The Authority examined likelihood of continuation or recurrence of injury to the domestic industry, for which the following information/claims was considered.

Significant price undercutting and underselling by imports with current measures

61. It is noted that dumped imports from subject country are significantly undercutting the prices of domestic industry in the Indian market even with the duty in force. It is likely that should the present anti dumping duties be revoked, the extent of price undercutting might increase significantly.

Vulnerability of the domestic industry

62. In examining the vulnerability of the domestic industry, the Authority considered the trends in import and consequent impact of the same on the domestic industry in terms of various injury parameters. The Authority notes that with the appearance of alleged transhipped imports and increase in direct shipments, the domestic industry reported significant deterioration in profits, cash flow and return on investments. With significant increase in both direct and alleged transhipped imports in the POI, profits, cash flow and return on investments deteriorated significantly.

Freely disposable production capacity with Chinese producers

63. The excess capacity available with the Chinese producers as per the information on record is summarized as follows:

Total known capacity	476000
Exports (A)	85937
Domestic Demand (B)	165000
Excess Capacity	227063
Reasonable expected operating rate	80%
Production (C)	382400
Excess Production (C-A-B)	131463

It is noted that there are significant freely disposable capacities with the Chinese producers. The disposable available capacity is far excess of entire Indian demand.

Level of current dumping margin

64. Dumping margin is very significant even when antidumping duties are in force. In the previously concluded investigation also, the Authority found significant dumping margin.

Export orientation of foreign producers

65. It has been submitted that the producers in China have built capacities far in excess of its domestic demand. Further, there are several large scale producers of subject goods who are competing very aggressively with each other, not only in their domestic market but in export markets as well and are sparing no efforts to gain market share in third country markets. From one of the websites, it was noted that one of the producers in China claimed that they are exporting to more than 60 world countries (www.zhongcheng.gd.cn/english). Capacities after reducing domestic consumption are significantly higher than domestic demand, which clearly shows that huge capacities have been created considering export markets. Further, the information made available to the Authority with regards to exports from China is tabulated below:

Country	2002-03		2003-04		2004-05	
	MT	Rate US\$/MT	MT	Rate US\$/MT	MT	Rate US\$/MT
World	70684	535.52	84681	477	85937	547
India	563	517.45	1175	437	972	544

66. It is thus considered that even when Chinese exports are increasing, the Chinese producers are faced with unutilized freely available disposable capacities.

Other comments made by interested parties and their examination by the Authority

67. It has been argued by Arvind Mills in their submissions that M/s TCP Ltd and M/s Gulshan Chemicals have shown profits whereas other participating companies have shown financial losses. It has also been submitted that the financial results

published by TCP Ltd for their chemical division and the annual report of Gulshan Chemicals show profits for the period of investigation. It has also been added that there is a clear contradiction in participating companies showing losses and the supporters showing profits. The reason for this could be the fact that the applicants are using Zinc route for production of subject goods whereas supporters are using Sodium Format route and, thus, making losses. It has also been added that though Gulshan chemicals shown decline in profits during 2004-05 this could be due to other reasons like higher depreciation cost and interest on term loan which was not in the previous year. The domestic industry has countered these remarks by stating that the performance of the Gulshan Chemicals may be verified by the Authority. They have also added that the performance of the supporting company i.e M/s Gulshan Chemicals have been adversely affected on account of dumping from subject country.

68. The Authority has examined the arguments of various interested parties. With regards to the submission of the importers, it is noted that the Authority wrote letters to M/s Gulshan Chemicals to submit the information as required in the domestic industry questionnaire. However, no such cooperation was forthcoming from M/s Gulshan Chemicals. It is further noted that the subject company being another multi product company (it manufactures sodium sulphite also in addition to the subject goods besides the byproducts) , it is not possible for the Authority to determine and verify the injury parameters pertaining to the subject goods as the information given in the balance sheet does not indicate the information pertaining to the subject goods only. On the basis of the above, a comprehensive examination of the M/s Gulshan Chemicals may not be possible due to the fact they have not cooperated in this investigations in spite of reminders sent to them in this regard.

Conclusions on continuation and recurrence of injury

69. After examination of the domestic industry in terms of various injury parameters, the Authority concludes that performance of the domestic industry deteriorated in terms of profits, cash profits; return on investments, inventories. Profits of the domestic industry declined so materially that profit before interest & depreciation became negative in the investigation period from a situation of positive upto 2003-04. Capacity utilization first improved and thereafter declined. Overall growth of the domestic industry was negative. Price undercutting was positive even after

including the prevailing level of anti dumping duties. Performance of the domestic industry improved in terms of production, domestic sales volumes, productivity, wages, etc. however, improvements in these parameters were more than off-set by negative improvements in profits, cash profits and return on investments. Having regard to the various requirements under Annexure-II, the Authority concludes that the domestic industry has suffered continued injury.

70. The present investigations are the sunset review investigations and continuation and recurrence of injury to the domestic industry is required to be examined in the context of the requirements under sunset Review. In this regard, it is noted that the dumped imports from subject country are already undercutting the prices of the domestic industry to a very significant extent and should the present duties be revoked, the extent of price undercutting would further increase, which would be most likely scenario which would result in further increased injury to the domestic industry. It is further noted that both price under cutting and underselling were positive even when duties are in force.

71. Further, the performance of the domestic industry was already adverse during the period under consideration and it is likely that without anti dumping measures in place considerable increased volumes of the product concerned would be shipped in the Indian market at very low prices, undercutting the domestic industry prices. It is also noted that the domestic industry is already suffering material injury as a result of dumped imports from other countries and removal of present anti dumping duty from China PR would cause a further price depression in the Indian market, as the domestic industry would have no other option but first to try to maintain its market share rather than reduce its production. This would in turn further erode the profitability of the domestic industry. Further, significant price difference between imported material and domestic material in the event of revocation of anti dumping duties and price sensitivity of the product would result in consumers largely switching over to the imports.

72. It is noted that the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing country. However, given that the present investigation is sunset review what is relevant to examine here is whether the imports at dumped prices would continue in significant volume in the event of revocation of Anti-dumping duty. This is the most likely situation given the surplus capacity with exporter from China PR as

mentioned in the earlier paragraph in view of the fact that there are huge exports to the other countries by the Chinese exporters and exports to India continue to be small as compared to their exports to other markets. It is also noted that the level of their export prices to India also continue to depress the domestic industry's prices. Further, the profitability, cash flow and return on investment of the domestic industry may decline significantly should present anti dumping duty is revoked and thus situation of the domestic industry would be adversely affected.

73. On the basis of the above examination, it is held that domestic industry continues to suffer material injury on account of dumped imports from subject country and injury is likely to continue if anti dumping duty from subject country is withdrawn.

G Conclusions:

74. The Authority has, after considering the foregoing, come to the conclusion that:

(a) The subject goods have been exported to India from the China PR below its normal value resulting into dumping and there is a likelihood of continued dumping of subject goods from China PR if anti dumping duty from subject country is withdrawn.

(b) The Domestic Industry continues to suffer material injury on account of the dumped imports of the subject goods from China PR.

(c) The Authority considers it appropriate that anti dumping duties is required to be imposed as modified in respect of imports from China PR, as withdrawal thereof would lead to continuation of dumping and injury.

75. The Authority therefore considers it appropriate to recommend the continuation of anti-dumping duty as modified on imports of Sodium hydrosulphite (SHS) originating in or exported from China PR. The amount of anti-dumping duty shall be equal to the margin of dumping or margin of injury, whichever is less and which if levied would remove the injury to the domestic industry. The Authority has determined that injury

margin is the lesser of the two margins. For the purpose of determining injury margin, the landed price of imports has been compared with the non-injurious selling price of the domestic industry determined for the period of investigation. The anti dumping duty shall be the difference between the amounts mentioned in column 9 below and the landed value of imports in US\$/MT provided the landed price per MT is less than the amount specified in the column 9 below.

S. No	Sub-Heading	Description of Goods	Specification	Country of Origin	Country of Export	Producer	Exporter	Amount	Unit of Measurement	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	2831 and 2832	Sodium Hydrosulphite	All grades	China PR	Any Country	Any Producer	Any Exporter	1063.11	MT	US \$
2	2831 and 2832	Sodium Hydrosulphite	All grades	Any Country	China PR	Any Producer	Any Exporter	1063.11	MT	US \$

76. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties levied under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

77. An appeal against the order of Central Government shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

CHRISTY L. FERNANDEZ, Addl. Secy. & Designated Authority